जन्मपत्रदीपक

Buyer's Order No.......................................attached

or Photo copy of L/C

GRI Form No..Triplicate

Declarations Forms

....

....

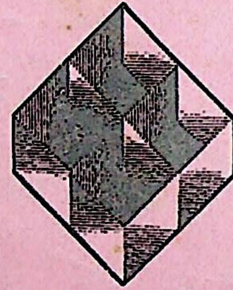
....

SHIPPING Marks & Nos.

Shipper's Signature..

Name & Address of Shipper

No shipments will be accepted if packages are not stencilled with shipping Marks & Nos, and Port of Discharge.



HEP-SHIPPING & TRAVEL AGENTS

Ck. 16/64 suriya, bulanala, Varanasi-221001.

Tel : 55964, Telex : 0545-262, Cable : "Polytrade"

॥ श्रीः ॥

काशी संस्कृत ग्रन्थमाला
११७



(ज्यौतिषविभागे पञ्चमं (५) पुष्पम्)

॥ श्रीः ॥

जन्मपत्रदीपकः

सोदाहरणसटिप्पणहिन्दीटीकापरिष्कृतः

रचयिता
आजमगढ़मण्डलान्तर्गतब्रह्मपुराभिजनश्रीधर्मदत्तद्विवेदिसूनुः
श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदो ज्यौतिषाचार्यः

चौखम्भा संस्कृत संस्थान
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा विक्रेता
जड़ाव भवन, के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी (भारत)

Publishers :—
CHAUKHAMBHA SANSKRIT SANSTHAN
Publishers and Book Sellers
Jadau Bhawan, K. 37/116, Gopal Mandir Lane
VARANASI-221001 (INDIA)

Fifth Edition 1975
Price : Rs. 3–50

Sole Distributors :—
CHAUKHAMBHA ORIENTALIA
A House of Oriental and Antiquarian Books
P. O. Chaukhambha, Post Box No. 32
Gokul Bhawan, K. 37/109, Gopal Mandir Lane,
VARANASI-221001 (India)

प्राक्कथन

यत्पादकञ्जयुगलस्मरणात्खलु शङ्करः ।
सकुटुम्बः समर्थोऽभूच्छङ्कर्तुं किल तं नुमः ॥

भारत के कोने-कोने तक जन्मपत्रनिर्माण का प्रचुर प्रचार होते हुए भी ऐसी छोटी कोई पुस्तक नहीं मिलती जिससे थोड़े ही में उसके सारे सार ज्ञात हो जायँ। मानसागरी, होरारत्न, जातकपद्धति प्रभृति पुस्तकें जो आजकल बाजारों में अधिकता से उपलब्ध होती हैं, विस्तृतरूप में और दुरूह होने के कारण प्रत्येक पण्डित के लिये उपकारक नहीं हैं। अतः मैंने अपने कई छात्रों और वैयाकरण मित्रों के बार-बार अनुरोध करने पर आजकल साधारणतः जिन-जिन विषयों का सन्निवेश जन्मपत्रिकाओं में होता है, उन्हीं के बनाने के प्रकारों को यथासाध्य सरल पद्यों द्वारा इसमें लिखा है। जिन विषयों में कोई विशेषता नहीं उनको प्राचीनाचार्य्योक्त पद्यों में ही रख दिया है। प्रत्येक विषयों का झटिति परिज्ञान हो जाने के लिये सोदाहरण सरल हिन्दी टीका और जगह-जगह पर आवश्यक टिप्पणी भी कर दी है।

पुस्तक का आकार बढ़ जाने के भय से फलितभाग का विशेष सन्निवेश इसमें नहीं किया गया है। यथासम्भव अवकाश मिलने पर दूसरे भाग के रूप में (यदि प्रथम भाग पण्डितों के हृदय को कुछ भी आकर्षित कर सका तो) उसके प्रकाशन का प्रयत्न किया जायगा।

इसमें लिखित प्रत्येक विषय के बारे में किसी प्रकार की खींचातानी नहीं की गई है। इसको विज्ञजन अपनी सारासार-परिशीलिनी बुद्धि से पक्षपातविहीन होकर स्वयं विचार कर लें।

अनेन चेत्सज्जनमानसेषु हर्षोद्गमः स्याल्लवमात्रमेव ।
तदाल्पमेधोत्थमपि स्वकीयं परिश्रमं धन्यतमं हि मन्ये ॥
दृग्दोषजा यास्त्रुटयो ममेह याश्चैव सम्मुद्रणयन्त्रदोषात् ।
तास्तास्समस्ताः स्वधिया सुधीभिः संशोधनीयाः स्वकृपालवेन ॥

शमिति ।

शारदासदनविद्यालय, ब्रह्मपुर
२४-१२-१९३५ ई०

सज्जनों का सेवक—
विन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदी

ग्रन्थकृद्वंशपरिचयः—

काश्या उदीच्यां दिशि तर्कराम (३६) क्रोशे सुदूरे विदुषां निवासे ।
आजमूगढप्रान्तगते सुरम्ये ग्रामे शुभे ब्रह्मपुराभिधाने ॥ १ ॥
आसीद् द्विवेदी द्विजवर्यपूज्यः श्रीमद्भरद्वाजकुलावतंसः ।
मान्यो वदान्यः प्रपितामहो मे भोलेतिनाम्ना जगति प्रसिद्धः ॥ २ ॥
तस्याऽभवन्वह्निमितास्तनूजास्तेष्वग्रजो वालकरामशर्मा ।
तस्यानुजः कृष्ण इति प्रसिद्धो विद्वद्वरः सद्धिषणाधनाढ्यः ॥ ३ ॥
श्रीमाँस्ततो रामहितो महात्मा पितामहो मे मतिमानुदारः ।
विद्यानयोदारतया स्ववंशं स्वजन्मनालङ्करणं चकार ॥ ४ ॥
पुत्रास्तदीया बहवो विनष्टा अन्ते वयस्येव ततो बभूव ।
धीरो ह्युदारो विदुषां वरिष्ठः श्रीधर्मदत्तो जनको मदीयः ॥ ५ ॥
विंशत्यब्दवयस्कस्य तस्य पुत्रोऽभवं किल ।
विन्ध्येश्वरीप्रसादेति नाम्ना लोकेतिविश्रुतः ॥ ६ ॥
एकाकिनं मां जनको मदीयः सार्धैकवर्षीयमितोऽसहायम् ।
हा मेऽसहायां जननीं तथा च दुःखाम्बुराशौ नितरां निमग्नाम् ॥ ७ ॥
कृत्वा च मातापितरौ स्वकीयौ घोरान्धकारेऽतितरां विलीनौ ।
चित्तं स्वकीयं कठिनं विधाय यातो दिवं भूमितलं विहाय ॥ ८ ॥
श्रीविश्वनाथकृपया नगरीं तदीयां सम्प्राप्य मातृजनकस्य कृपावलम्बात् ।
रामाभिलाष इति सुप्रथितस्य नाम्ना ज्ञानं ह्यवाप्य सुलिपेस्तत एव सम्यक् ॥ ९ ॥
ततः श्रीप्रभुदत्ताख्यमहामहिमशालिनः ।
विज्ञवर्य्यस्य सविधे यजुर्वेदमपीपठम् ॥ १० ॥
श्रीपूज्यपादगुरुवर्य्यरिसालदत्ताज्ज्योतिर्विदः सुधिषणाधनिनस्तथा च ।
लोकोत्तरोत्तमगुणैर्ग्रथितस्य श्रीमत्पूज्याङ्घ्रिपद्मयुगलस्य सुधाकरस्य ॥ ११ ॥
सूनोः समस्तगणितार्णवपारगश्रीपद्माकरस्य शरणागतवत्सलस्य ।
ज्योतिर्विदः सकलकाव्यकलाप्रवीणश्रीचन्द्रशेखरसुधीप्रवरस्य तद्वत् ॥ १२ ॥
प्राप्यान्तेवासित्वं तेभ्यः समवाप्य बोधकलिकां च ।
दत्त्वाचार्यपरीक्षां ज्योतिःशास्त्रे समुत्तीर्णः ॥ १३ ॥
लघुजातकस्य सरलां टीकां श्रीबालबोधनीनाम्नीम् ।
संस्कृतभाषाबद्धां विधाय पूर्वं ततः पश्चात् ॥ १४ ॥
जातकालङ्कृतेः स्पष्टां हिन्दीटीकां सभूमिकाम् ।
हौरिकाणां मनस्तुष्ट्यै (विनोदाय) विधाय तदनन्तरम् ॥ १५ ॥
अखिलव्यवहृतिसिद्ध्यै सु'फलितनवरत्नसंग्रहं' दिव्यम् ।
हिन्दीटीकोपेतं सोदाहरणं प्रकाशयित्वा च ॥ १६ ॥
दूरस्थत्वाद्विदित्वा शिथिलितमखिलं स्वीयगेहप्रबन्धं
ह्येतद्ग्रामस्य काश्याः सुनिवसनविधिं संविधास्यन् स्वगेहे ।
शुभ्रे संवत्सरे भूमिखगखगधरा १९९१ संमिते वैक्रमीये
ग्रन्थं चेमं सटीकं सुसमुचितचितं पूर्णतां प्रापयामि ॥ १७ ॥

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
मङ्गलाचरण	१
पञ्चाङ्ग पर से ग्रहस्पष्ट करने की रीति	"
घण्टादि (होरादि) से घट्यादि इष्टकाल बनाने की रीति (टिप्पणी में)	"
उदाहरण	२
क्रान्ति साधन की सारणी	४
सारणी द्वारा स्पष्टा क्रान्ति जानने की रीति	"
चर सारणी ६° अक्षांशसे ३६° अक्षांश तक	५–६
चर सारणी द्वारा काशी से अन्यत्र का तिथ्यादि जानने की रीति तथा उदाहरण	७
अन्यदेशीय ग्रह बनाने की रीति	८
भयात–भभोगानयन	"
चन्द्रमा स्पष्ट करने की रीति	१०
चन्द्रमा स्पष्ट करने की दूसरी रीति	"
पलभा और चरखण्ड का ज्ञान	११
काशी से पूर्व देशों के अक्षांश देशान्तर	१२–१३
काशी के पश्चिम देशों के अक्षांश देशान्तर	१४–१७
अक्षांश पर से सारणी द्वारा पलभाज्ञान की विधि	१८
पलभासारणी	"
लंकोदय पर से स्वोदय ज्ञान	"
आजमगढ़ का उदयमान	१९
अयनांश स्पष्ट करने की रीति	"
अयनांश बनाने की दूसरी रीति	२०
लग्न स्पष्ट करने की रीति	"
भोग्यांश पर से लग्नस्पष्ट करने का उदाहरण	२१

विषय	पृष्ठ संख्या
भुक्तांश पर से लग्नस्पष्ट बनाने का उदाहरण	२१
भुक्तभोग्यावयत्व में विशेष	२२
२५°।१८′ अक्षांश देशों में सारणी द्वारा लग्नस्पष्ट करने की रीति	२३
लग्न-सारणी	२४–२७
नतोन्नत कालज्ञान	२७
दशमलग्न साधन की रीति	"
सारणी पर से सब देशों के लिये दशमलग्न साधन की रीति सारणी सहित	२८–३१
विना नतकाल के ही दशमसाधन का प्रकार	३२
१२ भावसाधन	"
१२ भावचक्र	३३
विशेष	"
ग्रहों के भाव (अवस्था विशेष) का विचार	३४
ग्रहों की शयनादि अवस्था का ज्ञान	"
अन्य प्रकार की ग्रहों की अवस्थायें	३६
ग्रहों की पञ्चधा मैत्री	"
दशवर्गी	३७
राशिस्वामी	"
होरा–द्रेष्काण	३८
सप्तमांश	"
नवमांश	"
दशमांश द्वादशांश	"
राशिस्वामी होरा द्रेष्काण सप्तमांश–नवमांश बोधकचक्र	३९
दशमांश द्वादशांश बोधक चक्र	४०
षोडशांश और षोडशांशचक्र	"
त्रिंशांश और चक्र	४१
षष्ठ्यंश	४२

विषय	पृष्ठ संख्या
वर्गों की पारावतादि संज्ञा	४२
५ प्रकार की विंशोत्तरीया दशा	४३
महादशाज्ञान	"
महादशाबोधकचक्र	"
महादशाभुक्तभोग्यानयन	४४
महादशा का भोग्यानयन	"
भुक्तभोग्यानयन के उदाहरण	४५
महादशा लिखने का क्रमबोधक चक्र	४६
स्पष्टचन्द्रमा ही पर से दशा का भुक्तभोग्यानयन	"
स्पष्टचन्द्रमा ही पर से प्रकारान्तर से भुक्तभोग्यानयन	"
अंशादिनक्षत्र शेष पर से दशा का भोग्यानयन	४७
अन्तरदशासाधन का सुलभ प्रकार	"
अन्तर के ९ चक्र	४८
अन्तरादि साधन का दूसरा प्रकार	४९
अवरोहक्रम से ध्रुवकवश अन्तरादि का साधन	"
आरोहक्रम से ध्रुवकवश अन्तरादि का साधन	५०
प्रत्यन्तर का ध्रुवक साधन	"
सूचमदशा प्राणदशा के ध्रुवक साधन का प्रकार	५१
प्रत्यन्तर के ८१ चक्र	५२–६०
योगिनीदशानयन	६१
योगिनीदशावोधकचक्र	"
योगिन्यन्तरदशाज्ञान की रीति	"
योगिन्यन्तरदशावोधकचक्र	"
होरालग्नानयन	६२
जैमिनीयायुर्दायसाधन	६३
आयुर्दायज्ञान प्रकार	"
आयुर्दायबोधक चक्र	"
आयुर्दाय स्पष्ट करने की विधि	"
सारणी	६५
कचयाह्रासवृद्धि	"
अन्यप्रकार से आयुर्दायविचार	६६
ग्रन्थसमाप्ति का समय	"

श्रीजानकीजानये नमः

जन्मपत्रदीपकः

सोदाहरण-सटिप्पण-हिन्दीव्याख्योपेतः



मङ्गलाचरण—

यत्कृपालेशतः सर्वे केन्द्रेशाद्या दिवौकसः ।
इष्टं दातुं समर्थाः स्युस्तं रामं शिरसा नुमः ॥ १ ॥

जिसकी कृपा के लेश से ब्रह्मा, इन्द्र, महेश इत्यादि देववृन्द अथवा केन्द्रेश इत्यादि (केन्द्र स्थान १।४।७।१० के स्वामी, त्रिकोण स्थान ५।९ के स्वामी इत्यादि) ग्रह अपना-अपना अभीष्ट फल देने में समर्थ होते हैं, उस भगवान् श्रीरामचन्द्रजी को मैं शिरसे प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

पञ्चाङ्ग पर से ग्रह स्पष्ट करने की रीति—

सूर्योदयाद्यातकालं सावनेष्टं प्रकीर्तितम् ।
पञ्चाङ्गस्थं मिश्रमानं पङ्क्तिसंज्ञं बुधैः स्मृतम् ॥ २ ॥
अनयोरन्तरं कार्य्यमवशिष्टं दिनादिकम् ।
पङ्क्त्याधिक्ये यातसंज्ञमैष्यमिष्टाधिके भवेत् ॥ ३ ॥

यातैष्यकालेन दिनादिकेन
निघ्नी गतिः खाङ्ग(६०)हृताप्तभागाः ।
शोध्याश्च योज्याः स्फुटखेचरेषु
पाते तथा वक्रखगे प्रतीपम् ॥ ४ ॥

सूर्य के बिम्बार्धोदयकाल से जन्मसमय तक जितना घटी-पल बीता हो उस को सावन इष्टकाल और तिथिपत्र (पञ्चाङ्ग) में लिखे मिश्रमानकाल को पंक्ति कहते हैं (ग्रहलाघवीयपञ्चाङ्ग में सूर्योदय काल का ही स्पष्टग्रह बना रहता है, अतः उस में उदयकाल को ही पंक्ति समझना चाहिये)।

इन दोनों ([1]इष्टकाल और पंक्ति) का अन्तर करने (जिसमें जो घट जाय घटा देने) से जो शेष दिनादिक बचे, वह पंक्ति अधिक हो (अर्थात् पंक्ति में इष्ट घटाने से शेष बचा हो) तो यातदिवस (या ऋण चालन), इष्टकाल, अधिक हो (अर्थात् इष्टकाल में पंक्ति घटाने से शेष बचा हो) तो ऐष्यदिवस (या धनचालन) कहलाता है।

गत (ऋण) अथवा ऐष्य (धन) दिवसादि से पञ्चाङ्ग में लिखे स्पष्ट-ग्रह की गति को गोमूत्रिकागणितद्वारा गुणा करके ६० का भाग देने से जो लब्ध अंश, कला, विकलादि मिले उस कोक्रमसे पञ्चाङ्गस्थित स्पष्टग्रह की राश्यादि में घटाने और जोड़ने (अर्थात् यदि यातदिवसादि हो तो लब्ध अंशादि को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह की राश्यादि में घटाने और ऐष्यदिवसादि हो तो लब्ध अंशादि को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह के राश्यादि में जोड़ने) से तात्कालिक स्पष्टग्रह बन जाता है। वक्र ग्रह और राहु-केतु में उलटी क्रिया करने से (अर्थात् ऋण चालन हो तो वक्री-राहु-केतु में जोड़ने से तथा धन चालन हो तो वक्री-राहु-केतु-में घटाने से) स्पष्ट होता है ॥ २-३ ॥

उदाहरण—

श्रीविक्रमार्कसंवत् १९९१ श्रीशालिवाहनशकाब्द १८५६ शुद्धवैशाख कृष्ण पञ्चमी ४५।४४ बुधवार अनुराधानक्षत्र २५।१४ सिद्धियोग ७।१८ इसके बाद व्यतिपात योग सामयिक कौलवकरण १८।१२ में किसी का जन्म हुआ। उस समय सूर्योदयकाल से गत १३।५५ सावनेष्टकाल, अनुराधानक्षत्र का भयात ४५।५५ और भभोग ५७।१४ है और उस दिन दिनमान ३०।५० रात्रिमान २९।१० तथा उसके समीप गुरुवार को ४५।५८ मिश्रमान है।

यहाँ वारादि सावनेष्टकाल ४।१३।५५ से वारादि पंक्ति ५।४५।५८ आगे है इस लिये वारादि पंक्ति में वारादि सावनेष्टकाल को घटाया तो शेष

---

१. घण्टादि से घट्यादि इष्टकाल बनाने की रीति—

सूर्य्योविम्बार्धोदय से मध्याह्न के भीतर का जन्म हो तो जन्मकालीन घण्टा-मिनट में सूर्योदय-घण्टा-मिनट को घटा कर जो शेष बचे उसको ५ से गुणा करके २ का भाग देने से लब्ध घटी-पल सावन इष्टकाल होता है।

मध्याह्नोत्तर निशीथ (आधीरात) के भीतर का जन्म हो तो जन्मकालीन होरादि समय को ५ से गुणा करके २ का भाग देने पर जो लब्ध घटी-पल आवे उसको दिनार्ध में जोड़ देने से घट्यादिक सावनेष्टकाल हो जाता है।

निशीथ (आधीरात) के बाद सूर्य्यबिम्बार्धोदय के भीतर का इष्टघट्यादि जानना हो तो जन्मसमय के घण्टा-मिनट का पूर्ववत् घटी-पल बनाके उसको दिनमान और रात्रिदल के योग में (अथवा दिनार्धघटी तथा ३० घटी के योग में) जोड़ देने से पूर्वसूर्यबिम्बार्धोदय से जन्म-समय तक सावन इष्टकाल होता है।

=(५।४५।५८)-(४।१३।५५) = १।३२।३ वारादि ऋण चालन हुआ। इस ऋण चालन १।३२।३ से पंक्तिस्थ सूर्य की स्पष्टा गति ५९।० को गुणन करने के लिये न्यास—

गुणनफल = (१ । ३२ । ३) (५९ । ०)

= ५९ । १८८८ । १७७

= ९० । ३० । ५७ हुआ। इसमें ६० का भाग दिया तो स्वरूपान्तर से १ । ३० । ३१ अंशादि ऋण फल हुआ। इसको पंक्तिस्थ सूर्य के राश्यादि ११।२२।२८।३१ में घटाया तो तात्कालिक स्पष्टार्क—

= ११। २२° । २८′ । ३१″—(१°।३०′।३१″) = ११। २०° । ५८′ । ०″ हुआ। ऐसे ही भौमादि ग्रहों का भी साधन करना चाहिये।

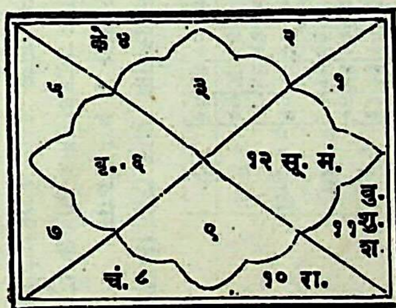
५२ प. ६ गुरौ मि.मा. ४५।५८ दि.मा. ३०।५०

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११		११	१०	५	१०	१०	९	३
२२		२३	२६	२७	५	०	२५	२५
२८		८	२३	२०	३९	१०	३८	३८
३१		३	१६	८	२१	२७	५६	५६
५९		४५	८२	८व	५७	५	३	३
०		१७	३७	९	७	४३	११	११

जन्मेष्ट ४।१३।५५ कालिकस्पष्टग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११	७	११	१०	५	१०	१०	९	३
२०	१४	२१	२४	२७	४	०	२५	२५
५८	१	५८	१६	३२	११	१	४३	४३
०	४९	३५	३१	३८	४४	४१	२२	२२
५९	८३८	४५	८२	८व	५७	५	३	३
०	४०	१७	३७	२	७	४३	११	११

जन्मलग्नम् २।२१।४१।१०



क्रान्तिसाधन की सारणी। परमा क्रान्ति २३°'२७'।

मेषादि छ राशियों में सायनार्क हो तो उत्तरा क्रान्ति अन्यथा दक्षिणा क्रान्ति होती है।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अंश
मेष०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	कन्या ५
	०	२३	४७	११	३५	५९	२३	४६	१०	३४	५७	२१	४४	८	३१	५४	१८	५०	३	२६	४९	११	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	७	२८	
तुला ६	०	५३	४५	३६	२७	१६	३	४७	३०	९	४५	१७	४५	१०	२८	४२	५१	५३	४९	३९	२१	५७	२४	४३	५४	५५	४८	३१	३	२५	३७	मीन ११
वृष १	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	सिंह ४
	२८	४८	१०	३१	५१	११	३१	५१	१०	३०	४९	८	२६	४४	२	२०	३८	५५	१२	२८	४४	०	१६	३१	४६	१	१५	२९	४३	५६	९	
वृश्चिक ७	३७	१७	२६	३	२७	२९	३८	२४	५५	१२	१५	२	३५	५२	५२	३६	३	१३	६	४०	५६	५३	३२	५१	५१	३०	४९	४७	२४	२३	२४	कुम्भ १०
मिथुन २	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	कर्क ३
	९	२२	३४	४६	५७	८	१९	२९	३९	४८	५७	६	१४	२२	२९	३६	४२	४८	५४	५९	४	८	१२	१५	१८	२१	२३	२४	२६	२६	२७	
धनु ८	२४	६	१६	२	२७	२८	५	१८	८	३३	३४	१०	२०	६	२६	२१	५०	५२	२९	३९	२२	४०	३०	५४	५१	२०	२२	५८	६	४६	०	मकर ९
अंश	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	अंश

सारणी द्वारा स्पष्ट क्रान्ति जानने की रीति—

सायन सूर्य के राशि और अंश के सामने वाले कोष्ठ में जो अंशादि क्रान्ति हो उसको अलग स्थापन करे। फिर सायन सूर्य के शेष कला विकला गतांश और ऐष्यांश सम्बन्धी क्रान्तियों के अन्तर से गुणा करके ६० का भाग देने पर जो कलादि क्रान्ति आवे उसको अलग स्थापित क्रान्त्यंश में यथास्थान जोड़ देवे तो सायन सूर्य की स्पष्टा क्रान्ति होती है।

उदाहरण—सायन रवि ०।१२°।२९'।२९" है तो ० राशि १२° के सामने की अंशादिक्रान्ति ४°।४४'।४५" हुई। फिर सायन रवि के कला विकला २९'।२९" को १२° और १३° सम्बन्धि क्रान्तियों के अन्तर से गुणा करके ६० का भाग दिया तो—

लब्धि = $\frac{(२९'।२९")[(५°।८'।१०" - ४°।४४'।४५")]}{६०} = \frac{(२९'।२९")(०°।२३'।२५")}{६०} = \frac{११।३०।२४।५}{६०}$ = ०'।१२" (स्वल्पान्तर से) मिली। इस को १२° के सामने की अंशादि क्रान्ति में जोड़ दिया तो स्पष्टा क्रान्ति = ४°।४४'।४५" + ०'।१२" = ४°।४४'।५७" हुई। सायनरवि मेष राशि में है अतः यह ४°।४४'।५७" उत्तरा क्रान्ति हुई।

क्रान्त्यंश और अक्षांश पर से पलादि चर जानने की सारणी—

	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	१ ३	१ १४	१ २४	१ ३५	१ ४६	१ ५६	२ ७	२ १८	२ ३०	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १५	३ २७	३ ३८	३ ५०	४ २	४ १५	४ २७	४ ४०	४ ५३	५ ६	५ १९	५ ३३	५ ४६	६ १	६ १५	६ ३०	६ ४५	७ ०	७ १६
२	२ ६	२ २७	२ ४९	३ १०	३ ३२	३ ५३	४ १५	४ ३७	४ ५९	५ २२	५ ४४	६ ७	६ ३०	६ ५३	७ १७	७ ४१	८ ५	८ ३०	८ ५४	९ २०	९ ४५	१० १२	१० ३८	११ ५	११ ३३	१२ १	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ १	१४ ३२
३	३ ९	३ ४१	४ १३	४ ४५	५ १८	५ २०	६ २३	६ ५६	७ २९	८ ३	८ ३६	९ ११	९ ४५	१० २०	१० ५६	११ ३२	१२ ८	१२ ४५	१३ २२	१४ ०	१४ ३६	१५ १८	१५ ५८	१६ ३९	१७ २०	१८ ३	१८ ४६	१९ ३०	२० ४५	२१ २	२१ ४९
४	४ १३	४ ५५	५ ३८	६ २१	७ ४	७ ४७	८ ३१	९ १५	९ ५९	१० ४४	११ २९	१२ १५	१३ १	१३ ४८	१४ ३५	१५ २३	१६ ११	१७ ०	१७ ५०	१८ ४१	१९ ३३	२० २५	२१ १८	२२ १३	२३ ८	२४ ५	२५ ३	२६ १	२७ २	२८ ४	२९ ७
५	५ १६	६ ९	७ ३	७ ५६	८ ४८	९ ४५	१० ३९	११ ३४	१२ ३	१३ २६	१४ २२	१५ १९	१६ १७	१७ १६	१८ १५	१९ १५	२० १५	२१ १७	२१ १९	२३ २३	२४ २७	२५ ३३	२५ ४०	२७ ४८	२८ ५७	३० ८	३१ २०	३२ ३४	३३ ४९	३५ ७	३६ २६
६	६ २०	७ २४	८ २८	९ ३२	१० ३६	११ ४२	१२ ४८	१३ ५४	१५ १	१६ ८	१७ १६	१८ २५	१९ ३४	२० ४४	२१ ५५	२३ ७	२४ २०	२५ ३४	२६ ४९	२८ ५	२९ २३	३० ४२	३२ २	३३ २४	३४ ४७	३६ १२	३७ २९	३९ ८	४० ३९	४२ १२	४३ ४७
७	७ २४	८ ३८	९ ५३	११ ८	१२ २४	१३ ४०	१४ ५७	१६ १५	१७ ३३	१८ ५१	२० ११	२१ ३१	२२ ५२	२४ १४	२५ ३७	२७ १	२८ ३६	२९ ५२	३१ २०	३२ ४९	३४ २०	३५ ५२	३७ २६	३९ १	४० ३९	४२ १८	४४ ०	४५ ४४	४७ ३०	४९ १९	५१ ११
८	८ २८	९ २३	११ १९	१२ ४५	१४ १२	१५ ३९	१७ ७	१८ ३६	२० ५	२१ ३५	२३ ६	२४ ३८	२६ १०	२७ ४४	२९ १९	३० ५५	३२ ३३	३४ १२	३५ ५२	३७ ३५	३९ १८	४१ ४	४२ ५१	४४ ४१	४६ ३२	४८ २६	५० २३	५२ २२	५४ २४	५६ २८	५८ ३६
९	९ ३२	११ ८	१२ ४५	१४ २२	१६ ०	१७ ३९	१९ १७	२० ५७	२२ ३८	२४ १९	२६ २	२७ ४५	२९ ३०	३१ १	३३ ३	३४ ५१	३६ ४१	३८ ३३	४० २६	४२ २१	४४ १८	४६ १७	४७ १२	५० २२	५२ २८	५४ ३६	५६ ४८	५९ २	६१ १९	६३ ४०	६६ ५
१०	१० ३६	१२ २४	१४ १२	१६ ०	१७ ४९	१९ ३८	२१ २९	२३ २०	२५ १२	२७ ५	२८ ५९	३० ५४	३२ ५०	३४ ४८	३६ ४८	३८ ४९	४० ५१	४२ ५५	४५ १	४७ ९	४९ २०	५१ ३३	५३ ४८	५६ ५	५८ २६	६० ४९	६३ १५	६५ ४५	६८ १८	७० ५५	७३ ३६
११	११ ४२	१३ ४०	१५ ३९	१७ ३८	१९ ३८	२१ ३९	२३ ४१	२५ ४३	२७ ४७	२९ ५१	३१ ५७	३४ ४	३६ १३	३८ २३	४० ३४	४२ ४७	४५ ३	४७ २०	४९ ३९	५२ ०	५४ २४	५६ ५०	५९ १९	६१ ५१	६४ २६	६७ ४	६९ ४६	७२ ३१	७५ २०	७८ १३	८१ ११
१२	१२ ४८	१४ ५७	१७ ७	१९ १७	२१ २९	२३ ४१	२५ ५४	२८ ८	३० २३	३२ ३९	३३ १७	३७ १६	३९ ३६	४१ ५१	४४ २२	४६ ४८	४९ १६	५१ ४६	५४ १८	५६ ५३	५९ ३०	६२ १०	६४ ५३	६७ ३९	७० २९	७३ ३२	७६ १९	७९ २०	८२ २६	८५ ३६	८८ ५०

क्रान्त्यंश और अक्षांश पर से पलादि चर जानने की सारणी—

	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१३	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३७	४०	४३	४५	४८	५०	५३	५६	५९	६१	६४	६७	७०	७३	७६	७९	८२	८६	८९	९३	९६
	५४	१५	३६	५७	२०	४३	८	३३	०	२८	५८	२९	१	३६	१२	५१	३१	१४	०	४८	३९	३३	३१	३१	३६	४४	५७	१५	३५	२	३४
१४	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४६	४९	५२	५४	५४	६०	६३	६६	६९	७२	७६	७९	८२	८६	८९	९३	९६	१००	१०४
	१	३३	३	३८	१२	४७	२३	०	३८	१८	५९	४३	२८	१३	४	५५	४९	४५	४४	४६	५१	५९	११	२६	४६	१०	३८	११	४९	३२	२२
१५	१६	१८	२१	२४	२७	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६८	७१	७५	७८	८१	८५	८८	९२	९६	१००	१०४	१०८	११२
	८	५१	३५	१९	५	५१	३९	२८	१८	१०	४	५९	५७	५६	५८	२	९	१८	३१	४७	२	२८	५४	२५	५९	३९	२३	१२	७	८	२५
१६	१७	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६३	६६	६९	७३	७६	८०	८४	८७	९१	९५	९९	१०३	१०७	१११	११५	१२०
	१६	११	६	२	५९	५७	१७	५८	५९	४	९	१८	२८	३९	५४	११	३२	५५	२१	५०	२४	१	४२	२७	१८	१३	१३	१९	३१	४९	१५
१७	१८	२१	२४	२७	३०	३४	३७	४०	४३	४६	५०	५३	५७	६०	६३	६७	७०	७४	७८	८१	८५	८९	९३	९७	१०१	१०५	११०	११४	११९	१२३	१२८
	२५	३१	३८	४५	५४	४	१६	२९	४३	५९	१८	१८	१	६	५४	४२	५७	३४	१८	५८	४५	३७	३३	३४	४०	५१	८	३१	०	३७	२०
१८	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४३	४६	४९	५३	५७	६०	६४	६७	७१	७५	७९	८३	८७	९१	९५	९९	१०३	१०८	११२	११७	१२१	१२६	१३१	१३६
	३४	५२	१०	३०	५०	१३	३६	१	२८	५७	२८	१	२६	१४	५१	२८	२६	१६	११	९	११	१८	२९	४५	७	३५	९	४९	३६	३०	३३
१९	२०	२४	२७	३१	३४	३८	४१	४५	४९	५२	५६	६०	६४	६७	७०	७५	७९	८४	८८	९२	९६	१०१	१०५	११०	११४	११९	१२४	१२९	१३४	१३९	१४४
	४४	१४	४४	१६	२८	२३	५८	३६	१३	२६	३९	६	१४	३७	५९	५०	५८	३	११	२४	४१	३	२९	२	४०	२४	१५	१३	१८	३१	५२
२०	२१	२५	२९	३३	३६	४४	४४	४८	५२	५५	५९	६३	६७	७१	७६	८०	८४	८८	९३	९७	१०२	१०६	११३	११६	१२१	१२६	१३१	१३६	१४२	१४७	१५३
	१५	३८	१९	३	४८	३४	२२	१२	४	५८	५४	५४	५१	५९	८	१९	३४	५२	१५	४२	१६	५२	३५	२४	१८	१९	२८	४३	७	३७	२०
२१	२३	२७	३०	३४	३८	४०	४६	५०	५४	५९	६३	६७	७१	७५	८०	८४	८९	९३	९८	१०३	१०८	११२	११७	१२२	१२८	१३३	१३८	१४४	१५०	१५५	१६१
	७	१	५५	५१	४९	७	४८	५१	५५	२	१८	४७	२७	५०	१९	४४	१३	४६	२४	७	३	४७	४६	५१	३	२१	४७	२१	१३	५५	५६
२२	२४	२८	३२	३६	४०	४५	५०	५३	५७	६२	६६	७०	७५	७९	८४	८९	९३	९८	१०३	१०८	११३	११८	१२४	१२९	१३४	१४०	१४६	१५२	१५८	१६४	१७०
	२०	२६	३३	४१	५१	३	१०	३१	४०	९	३२	५७	२६	५८	३४	१३	५७	४५	३८	३६	३९	४८	३	२५	५४	३०	१४	३	८	२०	४२
२३	२५	२९	३४	३८	४७	४७	५१	५६	६०	६५	६९	७४	७९	८४	८८	९३	९८	१०३	१०८	११४	११९	१२४	१३०	१३६	१४२	१४७	१५३	१६०	१६६	१७२	१७९
	३४	५२	१२	३३	५५	२०	४६	१४	४५	१८	५५	३४	१६	३	५२	४६	४५	४८	५७	१०	२९	५४	२६	५	२	४	४९	१	२२	५४	३८
२४	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	१०३	१०८	११४	११९	१२५	१३१	१३६	१४२	१४८	१५५	१६१	१६८	१७४	१८१	१८८
	४९	२०	५२	२६	१	३९	१८	०	४४	३१	२१	१८	११	११	१५	२४	३८	५७	२०	४९	२५	७	१६	५३	५७	१०	३७	४	४६	३९	१४

यदि काशी से अन्यत्र का तिथि-नक्षत्र-योगों का मान, दिनमान इष्टकाल और स्पष्टग्रह जानना हो तो देशान्तरसारणी, क्रान्तिसारणी और चरसारणी की सहायता से चाहे जहाँ का तिथ्यादि का मान निकाला जा सकता है।

उदाहरण—

यदि कलकत्ते का तिथ्यादिमानानयन जानना है तो देशान्तर सारणी से कलकत्ते का अक्षांश २२°।३५' और काशी से पूर्व पलात्मक ५५।० देशान्तर जान कर अलग रख लिया। फिर सायनसूर्य ०।१२°।२९'।२९" पर से क्रान्तिसारणी की सहायता से स्पष्टा उत्तरा क्रान्ति का ४°।४४'।५७ का ज्ञान कर लिया। अब इस उत्तराक्रान्ति ४°।४४'।५७" और अक्षांश २२°।३५' पर से चरसारणी द्वारा चर का ज्ञान करने के लिये पहले—

२२° अक्षांश में ४° क्रांत्यंश का चर = १५।११
" ५° क्रांत्यंश का चर = २०।१५
६° कला में अन्तर = ४। ४

इस पर से (स्वल्पान्तर से) ४५' कला क्रान्ति में
त्रैराशिक गणित द्वारा अन्तर = ३।३

इसको ४° क्रान्ति के चर में जोड़ देने से २२° अक्षांश
में ४°।४५' क्रान्ति का चर = १९।१४

फिर—

२३° अक्षांश में ४° क्रांत्यंश का चर = १७।०
" ५° क्रांत्यंश का चर = २१।१७
६० कला में अन्तर = ४।१७

इस पर पूर्ववत् त्रैराशिक द्वारा ४५'
क्रान्ति में अन्तर = ३।१२

इसको ४° क्रान्ति में जोड़ने से २३° अक्षांश मे ४°।४५ क्रान्ति का
चर = २०।१७

उसके बाद—

२२° अक्षांश में चर = १९।१४
२३° अक्षांश में चर = २०।१७
६० कला में अन्तर = १।३

फिर त्रैराशिक से ३५' अक्षांश में
अन्तर = ०।३७ (स्वल्पान्तर से)

इसको २२° अक्षांश के चर में जोड़ देने से कलकत्ते में उस दिन का स्पष्ट चर
फल = १९।५१ हुआ

उत्तरा क्रान्ति है अतः १५ घटी में चर पल १९।५१ को
जोड़ देने से उसदिन कलकत्ते का दिनार्ध = १५।१९।५१
उस दिन पञ्चाङ्ग से काशीका दिनार्ध = १५।२५।०
दोनों का अन्तर = ०।५।९

काशी के दिनार्द्ध से कलकत्ते का दिनार्द्ध छोटा है इस लिये यह अन्तर ऋण हुआ। यदि कलकत्ते का दिनार्द्ध बड़ा होता तो यही अन्तर धन आता और कलकत्ता काशी से पूर्व है इसलिये देशान्तर पल ५५।० धन हुआ। काशी से पश्चिम देशों का देशान्तर ऋण होता है।

अब पञ्चाङ्गस्थ तिथ्यादिमान से संस्कार करने से कलकत्ते का तिथ्यादि मान—

पञ्चाङ्गस्थ तिथि = ४५।४४।०	नक्षत्र = २५।१४।०	योग = ७।१८।०
दिनार्द्धान्तर = —०।५।९	= −०।५।९	= −०।५।९
देशान्तर = +०।५५।०	= +०।५५।०	= +०।५५।०
कलकत्तेकी तिथि=४६।३३।५१	= २६।३।५१	= ८।७।५१

यहाँ ५१ विपल के स्थान में १ पल मान लिया तो कलकत्ते में पञ्चमी=४६।३४ अनुराधानक्षत्र = २६।४ व्यतिपात योग = ८।८ हुआ।

अन्यदेशीय स्पष्टग्रह बनाने की रीति—

यदि काशी से अन्यत्र का ग्रहस्पष्ट बनाना हो तो काशी के धन ऋण वारादि चालन में देशान्तर और चरान्तर का विपरीत संस्कार करने से (तथा ग्रह जो वक्री हो तो यथावत् संस्कार करने से) तत्तद्देशीय धन ऋण चालन होता है। उस पर से उपर्युक्त विधि से तत्तद्देशीय स्पष्ट ग्रह बन जाता है।

भयात-भभोगानयन—

गतर्क्षघटिका खाङ्ग६०शुद्धा स्वेष्टघटीयुता।
भयातं स्याद्भभोगस्तु निजर्क्षघटिकायुता ॥ ५ ॥
चेद्यातर्क्षघटी स्वेष्टात्पूर्वमेव समाप्यते।
तदेष्टकालात्सा शोध्याऽवशिष्टं भगतं भवेत् ॥ ६ ॥
गतर्क्षं क्षयसंज्ञं चेत्कार्येतर्क्षघटी तदा।
तत्पूर्वर्क्षघटीयुक्ता शेषं पूर्ववदाचरेत् ॥
एवं भर्क्षौ भयातादि विज्ञेयं स्वधिया वुधैः ॥ ७ ॥

यदि गतनक्षत्र का अन्त पूर्वदिन में होता हो तो गतनक्षत्र के मान (घटी-पल) को ६० घटी में घटा कर जो शेष बचे उसमें इष्टकाल जोड़ देने से भयात होता है और उसी शेष में वर्तमान नक्षत्र के घटी-पल को जोड़ देने से भभोग हो जाता है।

यदि गतनक्षत्र का अन्त उसी दिन इष्टकाल के पूर्व होता हो तो गत-नक्षत्र के घटी-पल को ही इष्टकाल में घटा देने से शेष भयात हो जाता है। यहाँ भी भभोग बनाने की क्रिया पूर्ववत् ही है :

यदि गतनक्षत्र की हानि हुई हो तो क्षयनक्षत्र के पूर्वनक्षत्र और क्षय-नक्षत्र इन दोनों के घटीपल को जोड़ कर जितना घटिकादि हो उसको गतर्क्षमान, मान के उस पर से पूर्वविधि के अनुसार भयात–भभोग बनाना चाहिये।

एवं यदि वर्तमान नक्षत्र की वृद्धि हुई हो और तीसरे दिन नक्षत्रान्त से पूर्वका इष्टकाल हो तो प्रथमविधि के अनुसार भयात–भभोग बना के दोनों में ६० घटी जोड़ देने से वास्तविक भयात–भभोग होता है ॥ ५–७ ॥

उदाहरण—

गत नक्षत्र विशाखा के घटी-पल २८।० को ६० घटी में घटाया तो ६०–(२८।०) = ३२।० शेष घट्यादि हुआ। इस ३२।० में सावनेष्टकाल १३।५५ को जोड़ दिया तो ३२।० + (१३।५५) = ४५।५५ भयात हुआ। और उसी शेष ३२।० में अनुराधा के घटी-पल २५।१४ को जोड़ दिया तो ३२।० + (२५।१४) = ५७।१४ भभोग हो गया।

सं० १९९१ शुद्धवैशाखकृष्ण १० सोमवार श्रवण ५।४३ को १०।४८ इष्ट काल पर जन्म है तो यहाँ इष्ट काल से पूर्वही गत नक्षत्र श्रवण की समाप्ति होती है अतः इष्टकाल १०।४८ में श्रवण के घटी पल ५।४३ को घटा दिया तो धनिष्ठा का ५।५ भयात हो गया और पूर्वविधि से धनिष्ठा का भभोग ५६।२४ हुआ।

शुद्ध वैशाखवदी १२ बुधवार पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र ५६।५३ के दिन सूर्योदय से २३।३६ इष्टकाल पर जन्म है तो यहाँ पूर्वदिन शततारकानक्षत्र की हानि है। इस लिये उससे पूर्व धनिष्ठा नक्षत्र के मान २।७ को गतनक्षत्र शतभिषा के मान ५६।५७ में जोड़ कर ५६।५७ + (२।७) = ५९।४ गतनक्षत्र का मान कल्पना कर के पूर्वोदित विधि के अनुसार पूर्वाभाद्रपदा का भयात २४।३२ और भभोग ५७।४९ हुआ।

अधिक वैशाख सुदी ४ चतुर्थी भौमवार को १।५ इष्टकाल पर जन्म है। उस दिन कृत्तिका नक्षत्र का १।४२ घटी-पल पर अन्त है तो यहाँ नक्षत्र वृद्धि के कारण दूसरे पूर्वदिन (द्वितीया रविवार) को रात्रिमें ५८।१५ घट्यादि पर भरणी का अन्त है। अतः भरण्यन्त ५८।१५ को ६० में घटाया तो १।४५ शेष हुआ इसमें इष्टकाल १।५ और ६० जोड़ दिया तो कृत्तिका का भयात १।४५ + ६० + १।५ = ६२।५० हुआ। उसी शेष १।४५ में कृत्तिकान्त १।४२ घटी-पल और ६० को जोड़ दिया तो—१।४५ + ६० + १।४२ = ६३।२७ भभोग हुआ। एवं सर्वत्र पूर्वापर दिन के नक्षत्रान्त को देख कर भयात–भभोग का आनयन करना चाहि

चन्द्रमा स्पष्ट करने की रीति—

भयातं भभोगाद् धृतं तद्गतर्क्षैर्युतं खाब्धि४०निघ्नं विभक्तं क्रमेण ३।
फलं भागपूर्वः शशी तद्गतिः खाभ्रखाभ्रेभनागाश्विनो भोगभक्ता ॥८॥

पलात्मक भयात में पलात्मक भभोग का भाग देने पर जो लब्धि आवे उसको गतनक्षत्र की संख्या में जोड़ देना। फिर योग फल को ४० से गुणा करके ३ से भाग देने पर लब्धि अंशादि स्पष्ट चन्द्रमा होता है। यहाँ अंश संख्या में ३० का भाग देकर लब्धि राशि और शेष अंश बना लेने पर राश्यादि चन्द्रमा स्पष्ट हो जाता है और २८८०००० में पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि चन्द्रमा की स्पष्टा गति होती है॥ ८॥

उदाहरण—

अनुराधा नक्षत्रके भयात ४५।५५ और भभोग ५७।१४को ६० से गुणा कर दिया तो पलात्मक भयात २७५५ और ३४३४ भभोग हुआ। इस पलात्मक भयात २७५५ में पलात्मक ३४३४ भभोग का भाग दिया तो लब्धि $= \frac{२७५५}{३४३४}$ = ०।४८।८।११ आई। इसमें गतनक्षत्र विशाखाकी संख्या १६ को जोड़ दिया तो योग १६।४८।८।११ हुआ। इसको ४० से गुणा कर के ३ से भाग दिया तो—

$\frac{(१६।४८।८।११)४०}{३} = \frac{६७२।५।२७।२०}{३}$ = २२४°। १′ ४९″—लब्धि अंशादि स्पष्ट चन्द्रमा हुआ। यहाँ प्रथम स्थान २२४ में ३० का भाग देने से लब्धि ७ राशि और शेष १४ अंश हुए। अत एव ७।१४°।१′। ४९″ राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा हुआ।

अट्ठाइस लाख अस्सी हजार २८८०००० में पलात्मक भभोग ३४३४ से भाग दिया तो लब्धि $= \frac{२८८००००}{३४३४}$ = ८३८′। ४०″ चन्द्रमा की स्पष्टा गति हुई॥

चन्द्रमा स्पष्ट करने की दूसरी रीति—

भाङ्घ्रिभुक्तघटी खाभ्राश्विघ्नी भाङ्घ्रिघटीहृता।
लब्धं कलाद्यं चन्द्रस्य गतराश्यादिना युतम्॥
स्फुटः स चन्द्रो विज्ञेयो गतिः पूर्वोदिता मता॥ ९॥

नक्षत्रचरणभुक्तघटी को २०० से गुणा करके चरणभोगघटी से भाग देने पर जो लब्धि कलादि प्राप्त हो उसको चन्द्रमा की गतराशिसंख्या और वर्तमान चन्द्रराशि के गतनवांशांशादि के योग में जोड़ देने से स्पष्ट राश्यादि चन्द्रमा होता है॥ ९॥

उदाहरण—

भयात में ४ का भाग दिया तो चरणभोग $= \frac{५७।१४}{४}$ = १४।१८।३० हुआ त्रिगुणितचरणभोग को भयातघटी में घटाया तो नक्षत्र चरणका भुक्त घट्यादि

= ४५।५५-३ (१४।१८।३०) = २।५९।३० हुआ।

चरणभुक्तघटी को २०० से गुणा करके चरणघटी से भाग दिया तो

लब्धि कलादि $= \frac{(३।५९।३०)२००}{५४।१८।३०}$

$= \frac{१०७७०\times२००}{५५५१०}$

$= \frac{२१५४००}{५५५५१} =$ ४१′।४९″ आई।

और १४१ शेष बचा इस को त्याग दिया। लब्ध कलादि को चन्द्रमा की गतराशि संख्या ७ और वर्तमान चन्द्रराशि वृश्चिक के गतनवांशसंख्या ४ के अंशादि १३°।२०′ के योग ७।१३°।२०′ में जोड़ दिया तो राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा = ७।१३°।२०′ + ४१′।४९″ = ७।१४°।१′।४९″ हो गया।

पलभा–चरखण्डज्ञान—

दिनार्धकालेऽजमुखस्थिते या भा सायनार्के पलभा भवेत्सा।
दिग्भिर्गजैर्दिग्गुणितैर्गुणांशैस्त्रिष्ठा हताः स्युश्चरखण्डकानि ॥ १० ॥

जब मध्याह्नकाल में सायन सूर्य मेषादि में हो उस दिन मध्याह्नकालमें १२ अंगुल शंकु की छाया को पलभा कहते है। पलभा को ३ स्थानों में रख के क्रम से १०, ८, $\frac{१०}{३}$ से गुणा कर देने पर मेषादि राशियों के ३ चरखण्ड होते हैं ॥ १० ॥

उदाहरण—

आजमगढ़ की पलभा ५।५१ को ३ स्थानों में ५।५१, ५।५१, ५।५१ रख से क्रम से १०, ८, $\frac{१०}{३}$ से गुणा कर दिया तो गुणन फल ५८।३०, ४६।४८, $\frac{५८।३०}{३}$ हुए। सर्वत्र 'अर्धाधिके रूपं ग्राह्यमर्धाल्पे त्याज्यम्' इस नियम के अनुसार दूसरे अंको का त्याग दिया तो क्रमसे ५८।४७।१९ मेषादि के चरखण्ड हो गये।

यहाँ जो पलभाज्ञान प्रकार दिया है उस से सर्वत्र की पलभा का ज्ञान हो जाना सुलभ नहीं है। अतः इस कठिनाई को दूर करने के अभिप्राय से कतिपय देशों के अक्षांश और उस पर से पलभाज्ञान की सारणी नीचे दी जाती है—

काशी से पूर्व देशों के अक्षांशादि—

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०	देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ°
अकयाव (वर्मा)	२९।०	१।४०।०	आराकान (वर्मा)	२०।५०	१।४४।४०
अगरतला (बंगाल)	२३।५०	१।२३।५०	आवा (वर्मा)	२२।०	२।३०।१०
अंगलस्टेट (विहार)	२०।४८	०।२०।१०	आसनसोल (बंगाल)	२३।४२	०।४०।१०
अमरपुर (वर्मा)	२१।५५	२।११।१०	आसाम	२६।०	१।४०।०
अमावा राज्य	२५।९	०।२८।२०	इंग्लिशबाजार(बंगाल)	२५।०	०।५१।५०
अलन (वर्मा)	२२।११	२। १।३०	इच्छागढ़	२३।५	
अलीगंज हथुआ	२६।५०	०।१४।०	उडीसा	२१।१०	०।२९।४०
अलीपुर (बंगाल)	२२।३२	०।५४।०	ऐजल (आसाम)	२३।४४	१।४५।०
आजमगढ (यू०पी०)	२६।०	०। २।३०	कछार (विहार)	२५।३०	०।४६।४०
आरा (विहार)	२५।३४	०।१७।१०	कटक (विहार)	२०।२८	०।३०।०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
कलकत्ता	२२।३५	०।५५।०
कलिङ्गपट्टम्(मद्रास)	१८।२०	०।११।४१
काठमण्डू (नैपाल)	२७।४२	०।२२।०
कृष्णगढ़ (बंगाल)	२३।२४	०।५५।३०
कुदरा	२५।५६	०। ६।१०
कुमिल्ला (बंगाल)	२३।२५	१।२३।२०
कूचविहार (बंगाल)	२६।२०	१। ४।५०
कोचीन (वर्मा)	२६।०	२।२०
खण्डपारा (बिहार)	२०।१६	०।२२।०
खल्लारस्टेट ,,	२१।३७	०।२६।२०
खुरदा ,,	२०।११	०।२६।४०
गञ्जाम (मद्रास)	१९।२२	०।२१।०
गया	२४।४९	०।२०।०
गरवा (बिहार)	२४।१०	०। ८।४०
गाजीपुर (यू० पी)	२५।३४	०। ४।०
ग्वालन्दो (बंगाल)	२३।५०	१। ७।४०
ग्वालपाडा (आसाम)	२६।११	१।१६।१०
गिद्धौर	२४।५१	०।३३।०
गुरला (नैपाल)	२७।५५	०।१५।०
गोपालपुर (मद्रास)	१९।१६	०।१९।३०
गोरखपुर (यू० पी)	२६।४५	०। २।२०
गोलाघाट (आसाम)	२६।३०	१।४९।०
गोहाटी ,,	२६।११	१।२७।०
चन्द्रपुर (बंगाल)	२३।१३	०।१६।४०
चन्दर नगर ,,	२२।५२	०।५४।१०
चेरापंजी (आसाम)	२५।१७	१।२७।५०
चैवासा (बिहार)	२२।३३	०।२८।०
छत्तरपुर (मद्रास)	१९।२१	०। २।१०
छपरा (बिहार)	२५।४७	०।१७।०
छयगाव (आसाम)	२६।५	१।२३।०
छोटानागपुर(बिहार)	२३।०	०।२०।०
जगन्नाथगंज(बंगाल)	२४।३९	१। ८।२०
जगन्नाथपुरी(बिहार)	१९।४५	०।३०।०
जनकपुर	२३।४३	०।१२।०
जमालपुर (बिहार)	२५।१९	१।१०।०
जयपुर ,,	२०।५१	०।३३।५०
जलपाईगुरी(बंगाल)	२६।३२	०।५७
टाटानगर (बिहार)	२२।५०	०।३१।४
टेकारी	२४।४८	०।१७।३०
डालटनगंज(बिहार)	२४।२	०। ९।०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
डिबरूगढ़ (आसाम)	२७।२९	१।५९।०
डीमापुर ,,	२५।५१	१।४८।०
डुमराँव	२५।३२	०।१२।०
डुमरिया इस्टेट	२७।२९	०।१५।६
ढाका (बंगाल)	२३।४३	१।१५।८
दमदम ,,	२२।३८	०।५४।४०
दरभङ्गा (बिहार)	२६।१०	०।३०।०
दार्जिलिङ्ग(बंगाल)	२७।३	०।५२।४०
दिनाजपुर	२५।२७	०।५७।३०
दुमका (बिहार)	२४।३०	०।४३।४०
देवगढ़ ,,	२१।३२	०।१७।४०
देवगढ़ ,,	२४।३०	०।३७।३०
धवलागिरि (नैपाल)	२९।११	०।२०।०
धानकुटा ,,	२६।५५	०।४३।२०
धुबरी (आसाम)	२६।२	१।१०।०
नदिया (बंगाल)	२३।२४	०।५९।२०
नरायनगंज(बंगाल)	२२।२७	१।१५।१०
नालगिरिराज्य(बिहार)	२१।२७	०।३७।५०
नेवालपुर(नैपाल)	२७।४५	०।१२।०
नैपालराज्य(हिमालय)	२७।५९	०। ९।४०
पटना (उडीसा)	२०।२४	०।१२।१०
पबना (बंगाल)	२४।१	१।३।०
पलासी	२५।३५	०।४९।४०
पलामू	२३।५२	०।१३।०
पुर्निया (बिहार)	२५।४९	०।४५।०
पेगू (वर्मा)	१७।१५	२।१५।०
प्रोम (वर्मा)	१८।४७	२। २।३०
फरीदपुर (बंगाल)	२३।३६	१। ७।४०
बकसर (बिहार)	२५।३४	०।१०।१०
बरदमान (बंगाल)	२३।१६	०।४८।०
बरहमपुर (मद्रास)	१९।१८	०।१८।३०
बलिया (यू० पी०)	२५।४४	०।१२।०
ब्रह्मपुर (बङ्गाल)	२४।६	०।५१।०
बाकुडा (बङ्गाल)	२३।१४	०।४१।१०
बाकरगंज(बङ्गाल)	२२।२९	१।१३।१
बालासोर (बिहार)	२१।३०	०।३२।०
बांकीपुर (बिहार)	२५।४०	०।२२।०
बांसी (बिहार)	२४।४०	०।३९।४०
बैरीसाल (बङ्गाल)	२२।४३	१।१४।०
बोगरा (बङ्गाल)	२४।५१	१। ४।२०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
भटगान (नैपाल)	२७।४२	०।२३।४०
भभुआ	२५।५	०। ५।५०
भागलपुर (बिहार)	२५।१५	०।४०।०
भामू (वर्मा)	२४।१६	२।२०।०
भूटान (हिमालय)	२७।३०	१।२०।०
भैरवबाजार(बंगाल)	२४।२	१।१९।५०
मकसूदाबाद	२४।११	०।५३।०
मदारीपुर (बङ्गाल)	२३।१४	१।१२।३०
मधुबनी (बिहार)	२६।२१	०।३१।१०
मनीपुरराज्य(आसाम)	२४।४४	१।४९।४०
माडले (वर्मा)	२२।०	२।१०।०
मानेचौक	२६।७	०।२७।३०
मालदह (बङ्गाल)	२५।२	०।५१।२०
मुर्शिदाबाद	२४।११	०।५३।१०
मुंगेर (बिहार)	२५।२३	०।३५।०
मुजफ्फरपुर(बिहार)	२६।७	०।२४।०
मेदिनीपुर	२२।२९	०।४४।०
मैमनसिंह (वंगाल)	२४।४६	१।१४।०
मोतिहारी	२६।४०	०।१६।४०
मोकामा	२५।२४	०।२९।१०
मौलमीन (वर्मा)	१६।३०	२।२६।०
रंगून "	१६।४५	२।१४।०
रङ्गपुर (बङ्गाल)	२५।४५	१। ५।०
रांची (बिहार)	२३।२३	०।२३।४५
राजमहल	२५।२	०।४८।३०
रामपुर (बिहार)	२१।५	०।१३।४०
रानीगंज (बङ्गाल)	२३।३५	०।४१।०
लक्खीसराय	२५।१०	०।३६।१०
लखीमपुर (आसाम)	२७।१४	१।५१।१०
लासो (वर्मा)	२२।५८	१।२९।४०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
लोहरदग्गा (बिहार)	२३।२६	०।४२।३५
वंकोक (श्याम)	१४।०	१।५५।०
वारपेटा (आसाम)	२६।०	१।२०।३०
वारकपुर (बङ्गाल)	२२।४६	०।५४।०
वाराहभूमि	२३।१०	०।३४।०
वारीपद (बिहार)	२१।५६	०।३७।४०
बिहार	२५।११	०।२५।०
बेतिया (बिहार)	२६।४८	०।१५।१०
वैद्यनाथ धाम	२४।३०	०।३७।१०
शक्तिगढ़	२२।१	०।५०।०
शान्तिपुर (बङ्गाल)	२३।१४	०।५४।५०
श्याम	१४।०	२।५०।०
शिवसागर (आसाम)	२६।५९	१।५६।०
सदिया "	२७।५०	२। ७।०
सम्बलपुर (बिहार)	२१।२८	०। ९।०
सरगूजा	२३।५	०।५०।०
समस्तीपुर	२१।३५	०।१०।०
ससराम (बिहार)	२४।५७	०।१५।०
सिलहट (आसाम)	२४।५३	१।३९।०
" "	२६।३०	१।४०।०
सिलचर "	२४।५०	१।४४।४०
सिंहभूमि	२२।१५	०।२३।०
सिंगापुर	२१।०	३।२०।०
सीतामढ़ी	२६।३४	०।२४।०
सुन्दरगढ़ (बिहार)	२२।६	०।२०।०
सेहडा	२५।२८	०।१७।३०
सोनपुर	२१।५	०।१७।०
हजारीबाग (बिहार)	२३।५९	०।२४।०
हावीगंज (आसाम)	२४।२४	१।२५।०
हाकू (वर्मा)	२२।४०	१।४६।५०

काशी से पश्चिम देशों के अक्षांशदेशान्तर—

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
अकालकोट (वंबई)	१७।३१	१। ७।३०
अकोला (बरार)	२०।४२	०।५९।२०
अजन्ता (हैदराबाद)	२०।३३	०।१२।०
अजमेर(राजपुताना)	२६।२७	१।२३।०
अजयगढ़ (सी०आई)	२४।५३	०।२७।५०
अञ्जार	२३।४	२। ७।२०
अटक (पञ्जाब)	३३।५३	१।४७।१०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
अनन्तपुर (मैसूर)	१४।५	१।१७।१०
अनुरुद्धपुर (लङ्का)	८।२२	०।२६।१०
अनूपशहर	२८।२१	०।४६।४०
अमरावती (बरार)	२०।५६	०।५२।१०
अमरेली (बड़ोदा)	२१।३६	१।५७।३०
अमरोहा (यू०पी०)	२८।४४	०।४४।५०
अमृतसर (पञ्जाब)	३१।३७	१।२२।०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
अमेठी	२६।७	०।१२।०
अंबर (राजपुताना)	२६।५९	१। ७।१०
अम्बा (हैदराबाद)	१८।४४	१। ६।१०
अम्बाला (पञ्जाब)	३०।२१	१। १।२०
अयोध्या	२६।४८	०। ७।३०
अरन्तजी (मद्रास)	१०।११	०।३९।४०
अरवी (सी०पी०)	२०।५९	०।४७।२०
अलमोडा	२९।३७	०।३३।१०
अलवर	२७।३४	१। ३।२०
अल्पी (ट्रावंकोर)	९।३०	१। ६।१०
अलीगढ़ (यू०पी०)	२७।५४	०।४९।०
अलीबाग (बम्बई)	१८।३९	१।४०।५०
अलीराजपुर	२२।११	१।२६।०
अस्तूर (काश्मीर)	३५।२०	१।२१ ४०
अहमदनगर (बम्बई)	२२।३८	१।४०।०
,, ,,	१९।५	१।२०।२०
अहमदपुर (पञ्जाब)	२९।६	१।५७।२०
अहमदाबाद (बम्बई)	२३।२	१।४३।२०
आगरा (यू० पी०)	२७।१०	०।४७।३०
आबू (राजपुताना)	२४।३६	१।४२।३०
आरकोट (मद्रास)	१२।५५	०।३६।०
आरनी ,,	१२।४०	०।३६।५०
आसकोल (काश्मीर)	३५।५०	१।११।३०
आरकोनम् (मद्रास)	१३।५	०।३२।५०
इटावा (यू० पी०)	२६।४७	०।४०।३०
इन्दौर	२२।४४	१।१०।०
इम्फाल (मनीपुर)	२४।४४	१।४९।२०
इलोरा (हैदराबाद)	२०।२	२।१७।५०
उज्जैन (ग्वालियर)	२३।९	१। ९।०
उन्नाव (यू० पी०)	२६।२०	०।२७।०
उटकमण्ड (मद्रास)	११।२४	१।१३।२०
उदयपुर (राजपुताना)	२४।३५	१।३२।२०
उमरकोट (बम्बई)	२५।२२	२।१२।१०
उसका (यू० पी०)	२७।१४	०। २।१०
एटा ,,	२७।३५	०।४२।२०
औरङ्गाबाद	१९।५३	१।१७।५०
कच्छ (स्टेट)	२३।३०	२।२८।०
कटनी (सी० पी०)	२३।४०	०।२५।३०
कपूरथला (पञ्जाब)	३१।२३	१।१६।०
करौली (राजपुताना)	२६।३०	०।५९।२०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
कराची (बम्बई)	२४।५१	२।३८।४०
करीमनगर (हैदराबाद)	१८।२८	०।३९।०
कन्नौज (यू० पी०)	२७।३	०।२०।२०
कर्नाटक	१३।०	०।४०।०
कर्नौल (पञ्जाब)	२९।४२	१।१०।४०
कंकर (सी०पी)	२०।१५	१।१४।४०
कसौली (पञ्जाब)	३०।५३	१।५५।५०
काँकरौली	२५।०	१।३०।०
काञ्जीवरम् (मद्रास)	१२।५०	०।३२।३०
काठगोदाम (यू०पी)	२९।१६	०।३६।०
काठियावाड़ (बम्बई)	२०।०	२। ०।०
कानपुर (यू० पी०)	२४।२८	०।२७।३०
कालाबाग (पञ्जाब)	३२।४८	१।५४।०
कालीकोट (मद्रास)	११।१५	१।११।५०
काल्पी	२६।८	०।३२।०
किशनगढ़ (राजपुताना)	२६।३४	१। ८।०
कुण्डापुर (मद्रास)	२३।३८	१।२२।४०
कुनूर ,,	११।२०	१। १।४०
कुमाऊँ (यू० पी०)	२९।५५	०।३७।०
कुम्भकोणम्	१०।५८	०।३७।०
कुरुक्षेत्र	३०।०	१। ९।०
कोकनद (मद्रास)	१६।५७	०। ७।३०
कोचीनराज्य ,,	९।५८	१। ८।१०
कोटाराज्य (राजपुताना)	२५।१०	१।११।५०
कोलम्बो (लङ्का)	६।५६	०।३०।३०
कोलाचल (ट्रावंकोर)	८।१०	०।५८।२०
कोल्हापुरराज्य (बम्बई)	१६।४२	१।२८।०
खीरी (यू० पी०)	२७।५४	०।२२।०
खुरजा (यू० पी०)	२८।१५	०।५१।४०
खान्देश (बम्बई)	२०।४५	१।२०।०
खैरगढ़ (सी० पी०)	२१।२६	०।१९।४०
गढ़वाल (यू० पी०)	३०।१५	०।४३।४०
गाजियाबाद	२८।४०	०।५५।२०
गुरगांव (पञ्जाब)	२८।३७	०।५९।२०
गुरदासपुर ,,	३२।३	१।१५।३०
गुजरावाला ,,	३२।१०	१।२७।४०
गुजरात जि० (बम्बई)	२३।०	१।४५।०
गुजरात (पञ्जाब)	३२।३६	१।२९।१०
गोलकुण्डा (हैदराबाद)	१७।२३	०। ५।२०
गोलगोंडा (मद्रास)	१७।४१	०। ४।५०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
गोंडा (यू० पी०)	२७।२८	०।१०।०
ग्वालियर	२६।१४	०।४९।२०
चतुरपुर (मद्रास)	१९।२१	०।३४।३०
चँदौसी	२८।२८	०।४२।०
चन्दा (सी० पी०)	१९।५७	०।३६।३०
चम्बाराज्य (पञ्जाब)	३२।२९	१। ६।०
चिटार (राजपुताना)	२४।५४	१।२३।०
चित्तौड़ (मद्रास)	१३।१३	१।२५।२०
चित्रकूट	२५।१२	०।२१।०
चिनाव	३१।०	२। ५।०
चैनपुर	२६।२८	
छत्तीसगढ़स्टेट(सी.पी.)	२१।३०	०।१०।०
छत्तरपुरस्टेट(सो.आई.)	२५।५८	०।३३।४०
छिन्दवारा(सी०पी०)	२२।३	०।४०।१०
जगदलपुर(सी०पी०)	१९।५	०। ९।१६
जनकपुर ,,	२३।४३	०।१२।०
जफरावाद (बम्बई)	२०।५२	१। ८।४०
जवरा (सी०आई०)	२३।३५	१।२८।३०
जबलपुर (सी०पी०)	२३।१०	०।३०।२८
जम्बूराज्य(काश्मीर)	३२।४४	१।२१।
जयपुर (झाडी)	१८।५७	०। ३।४०
जयपुरराज्य(राजपु०)	२६।५५	१।१३।४०
जलालपुर	३२।४०	१।३७।५०
जलन्धर (पञ्जाब)	३१।१९	१।२०।०
जहाजपुर (राजपु०)	२५।३८	१।१६।५०
जामनगर	२२।२७	२।१०।०
जालौन (यू० पा०)	२६।८	०।४९।०
जींदराज्य (पञ्जाब)	२९।१९	१। ६।०
जूनागढ़राज्य(बम्बई)	२१।३१	२। ४।०
जैसलमेरराज्य(राजपु०)	२६।५५	१।५९।०
जोधपुरराज्य (राजपु०)	२६।१८	१।३९।२०
जौनपुर (यू० पी०)	२५।४६	०। ३।०
जौहरस्टेट (बम्बई)	१९।५२	१।३६।५०
झालरापाटन (राजपु०)	२४।३२	१। ८।०
झांसी (यू० पी०)	२५।२७	०।४५।२०
झुनझुन (राजपुताना)	२८।९	१।१६।०
टोंकराज्य (राजपु०)	२६।११	१।१२।३०
ट्रावङ्कोरराज्य(मद्रास)	९।०	१। ०।०
डेराइस्माइलखां(पञ्जाब)	३१।५१	२।१।२०
डूंगरपुरस्टेट(राजपु०)	२३।५०	१।३१।४०
डिडवना (राजपु०)	२७।१७	१।२५।५०
डूगरगढ़ (सी०पी०)	२१।१२	०।२८।२०
तञ्जोर (मद्रास)	१०।४७	०।३१।०
तारागढ़ (अजमेर)	२६ ०	१।२६।४०
त्रिचनापल्ली(मद्रास)	१०।५०	०।४३।१०
त्रिवेन्द्रम् (ट्रवङ्कोर)	८।२९	१। १।१०
द्वारका (बरौदा)	२२।१४	२। २।०
दिलावर	३९।४५	१।५४।२०
देवासस्टेट(सी.आई.)	२२।५८	१। ९।०
देवली (अजमेर)	२५।४६	१।१५।५०
देहरादून (यू०पी०)	३०।१९	०।४९।१०
देहली	२८।३८	०।५७।३०
दौलताबाद(हैदरा०)	१९।५७	१।१७।३०
धारनपुरस्टेट(बम्बई)	२०।३२	१।३७।५०
धरमशाला (पञ्जाब)	३२।१९	१। ६।१०
धवलपुरस्टेट(राजपु०)	२६।४२	०।५१।३०
नरसिंहगढ़ राज्य	२३।४४	०।५८।४०
नरसिंहपुर(सी०पी०)	२२।५७	०।३७।३०
नवानगरराज्य(बंबई)	२२।२७	२। ८।५०
नागपुर (सी०पी०)	२१।९	०।३९।१०
नागपुर	२०।०	०।२०।२०
नागौर	२७।१५	१।३३।४०
नाथद्वार	२४।५२	१।३०।०
नाभाराज्य (पञ्जाब)	३०।२५	१। ८।०
नारनौल (पटियाला)	२८।२	१। ८।४०
नासिक (बम्बई)	२०।२	१।३२।०
निजामाबाद(हैदरा०)	१८।४०	०।४८।२०
नीमच	२४:२७	१।२१।२०
नैनीताल (यू०पी०)	२९।२३	०।३५।०
नैपालगंज (यू०पी०)	२७।५९	०।३४।०
पटियालाराज्य(पञ्जाब)	३०।२०	१। ५।०
पण्ढरपुर (बम्बई)	१७।४१	१।१६।१०
प्रतापगढ़राज्य(राजपु०)	२४।२	१।१२।२०
प्रतापगढ़जि०(यू०पी०)	२५।२७	०।१३।०
प्रयाग ,,	२५।२८	०।११।४०
पठानकोट (पञ्जाब)	२८।१८	१। २।०
पांडीचेरी (मद्रास)	११।५६	०।३२।१०
पन्नास्टेट(सी०आई०)	२४।४४	०।२७।४०
पानीपत (पञ्जाब)	२९।२३	१।१९।३०
पालनपुर	२४।१२	१।४२।५०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
पीलीभीत(यू०पी०)	२८।४०	०।३२।०
पूना (बम्बई)	१९।०	१।३०।२०
पोरबन्दर (बम्बई)	२१।३७	२।१३।३०
पेशावर	३४।२	१।५५।०
पुष्कर	२६।२८	१।२५।०
फतेगढ़ (यू०पी०)	२७।२३	०।३३।२०
फतेपुर ,,	२५।५५	०।२२।५०
फतेपुर सिकरी	२७।६	०।५३।०
फतेपुर(राजपुताना)	२८।०	१।१९।४०
फरीदकोट (पञ्जाब)	३०।४०	१।२२।३०
फरुखाबाद(यू०पी०)	२७।२४	१। ०।२०
फिरोजपुर (पञ्जाब)	२७।४७	०।३०।१०
फिरोजपुर ,,	३०।५५	१।२४।०
फिरोजाबाद	१७।१५	१।० ।२०
बङ्कोट (बम्बई)	१७।५७	१।३९।१०
बघेलखण्ड(सी०आई०)	२४।१०	१।१७।०
बङ्गलोर (मैसूर)	१२।१८	०।४३।३०
बण्टवाल (मद्रास)	१२:५३	१।१९।१०
बदायूं	२८।१०	०।४०।०
बम्बई	१८।५५	१।४१।४०
बरवानी(सी०आई०)	२२।३	१।२०।३०
बरसी (बम्बई)	१८।१३	१।१.२।४०
बरार (सी०पी०)	२१।०	१। ०।०
बरढी (सी०आई०)	२४।३०	०। ५।४०
बरोच (बम्बई)	२१।४५	१।४०।०
बरौदा ,,	२२।०	१।३५।०
बरेली (यू० पी०)	२८।२२	०।३५।०
बलतिस्तान(काश्मीर)	२५।३.०	१।१०।०
बलरामपुर	२७।२७	०। ८।०
बलोत्तरा(राजपुताना)	२५।४९	१।४६।३०
बसाहर (पञ्जाब)	३१।३०	०।४५।०
बसीम (बरार)	२०।५	०।५८।२०
बसेन (बम्बई)	१९।२२	१।४०।४०
बस्तर (सी० पी०)	१८।३०	०।२०।०
बस्ती (यू० पी०)	२६।४८	०। ३।०
बहराइच ,,	२७।३४	०। १५।०
बहावलपुर (पञ्जाब)	२९।२४	१।५२।०
बादनूर (सी०पी०)	२१।५४	०।५०।३०
बादुला (लङ्का)	६।५९	०।१९।१०
बांदा (यू० पी०)	२५।२८	०।२७।०
बाराबङ्की ,,	२६।५६	०।१८।०
बारीदोआव (पञ्जाब)	३०।३२	१।४०।०
बारां (राजपुताना)	२५।५	१। ४।३०
बालाघाट(सी०पी०)	२१।५५	०।२७।३०
बालुचिस्तांन	२८।०	२। ०।०
बिजनौर	२९।४०	०।४३।०
बीकमपुर (राजपु०)	२७।४५	१।४८।२०
बीकानेर (राजपु०)	२८।१	१।३५।०
बीजापुर (बम्बई)	६९।५०	१।१२।२०
बुरहानपुर(सी०पी०)	२१।१७	०।४८।७
बुलन्दशहर	२८।२४	०।५९।१०
बून्दी (राजपुताना)	२५।२७	१। ३।१०
बेलरी (मद्रास)	१५।९	०।५१।१०
बेला (यू० पी०)	२५।५६	०। ९।४०
ब्यावर (अजमेर)	२६।६	१।२६।३०
बन्सवारा (राजपु०)	२३।३०	१।२६।०
भटिन्दा (पञ्जाब)	३०।११	१।२०।०
भण्डारा (सी० पी०)	२१।९	०।३३।०
भंदौरास्टेट(सीआई०)	२४।४८	०।५३।४०
भरतपुर (राजपुताना)	२७।१५	०।५५।०
भावनगर (बम्बई)	२१।४६	१।४८।०
भिलसा (ग्वालियर)	२३।३२	०।५१।३०
भिवानी (पञ्जाब)	२८।४६	१। ६।२०
भीर (हैदराबाद)	१९।०	१।११।४०
भुसावल (बम्बई)	२१।२	१।२२।१०
भूपालस्टेट	२३।१६	०।५५।०
भेरा (पञ्जाब)	३२।२९	१।४०।३०
भोरस्टेट (बम्बई)	१८।९	१।३१।०
मङ्गलोर (मद्रास)	१२।५२	१।२०।०
मण्डीराज्य (पञ्जाब)	३१।४३	०।५९।०
मथुरा	२७।३२	०।५०।०
मदुरा (मद्रास)	६।५८	०।५०।०
मद्रास	१३।४	०।२८।०
मलकापुर (बरार)	२०।५३	१। ७।१०
महाबलीपुर(मद्रास)	१२।३७	०।२२।२०
महेवा (यू० पी०)	२०।१८	०।३९।१०
मानिकपुर(यू० पी०)	२४।४	०।११।५०
मालवा (सी०आई०)	२३।४०	०।५५।२०
मांढा (सी० पी०)	२२।४३	०।२०।५०
मिर्जापुर (यू० पी०)	२५।४	०। ४।१०
मुजफरगढ़ (पञ्जाब)	२०।५	१।५७।२०

देशनाम	अक्षांश	देशान्तरघ०
मुजफरनगर(यू०पी०)	२९।२८	४।५२।४०
मुरादाबाद ,,	२०।५०	०।४२।०
मुलतान (पञ्जाब)	३०।१२	१।५५।०
मेरठ	२९।०	०।५३।०
मैनपुरी (यू० पी०)	२७।१४	०।३९।०
मोरवीराज्य (बम्बई)	३२।४९	२।१०।०
रतनगढ़ (बीकानेर)	२८।५	१।२३।३०
रतलामराज्य (c. i.)	२३।३१	१।२०।०
रत्नागिरि (बम्बई)	१७।८	१।३७।०
राजकोट ,,	२२।१८	२।२।३०
रामनगर(नैनीताल)	२९।१४	०।३८।२०
रानीखेत	२९।४०	०।३४।३०
राजगढ़स्टेट (c. i.)	२४।०	१।२।१०
रामकोला(सी०पी०)	२३।४०	०।१।२०
रामपुर (यू० पी०)	२८।४८	०।४।१०
रामेश्वर	९।४८	०।३७।३०
रायगढ (सी० पी०)	२१।७४	०।४।२०
रायपुर (सी० पी०)	२१।१५	०।१३।०
रायबरेली(यू० पी०)	२६।१४	०।१९।२०
रावलपिण्डी(पञ्जाब)	३३।३७	१।४०।०
रींवाराज्य (c. i.)	२४।३१	०।१७।३
रुरकी (यू० पी०)	२९।५२	०।५१।०
रुहेलखण्ड ,,	२८।३२	०।४०।०
रोहतक (पञ्जाब)	२८।५४	१।५।२०
लखनऊ (यू० पी०)	२६।५५	०।२०।०
ललितपुर ,,	२४।२२	०।४५।२०
लश्कर (ग्वालियर)	२६।१०	०।४८।२०
लाहौर (पञ्जाब)	३१।२७	१।२६।०
लोधियाना ,,	३०।५५	१।९।३०
बखसर(राजपुताना)	२४।४३	१।५८।३०
वङ्गनापाली(मद्रास)	१५।१९	०।४७।१०
वजीराबाद (पञ्जाब)	३२।२७	१।३०।२०
बद्रीनाथ (यू० पी०)	३०।४४	
वन्दरवाला (लङ्का)	६।५२	०।२०।२०
वर्धा (सी०पी०)	२०।४५	०।४३।३०
विजयानगर(मद्रास)	१५।२०	१।५।०
विजियानगरम्(मद्रास)	१८।७	०।४।२०
विमलीपट्टम्(मद्रास)	१७।५३	०। ५।०
विलासपुर(सी०पी०)	२२।५	०। ८।०
,, (शिमला)	३१।१०	१। ३।२०
शाहजहांपुर(यू०पी०)	२७।५४	०।३०।४०
शाहाबाद(यू०पी०)	२७।३०	०।२९।१०
शिकारपुर	२७।५७	२।२५।०
शिमला सपाटु(पञ्जाब)	३१।६	०।५८।१०
श्रीनगर (यू०पी०)	३०।१५	०।४२।०
श्रीनगर (काश्मीर)	३४।६	१।२०।४०
श्रीरङ्गम् (मद्रास)	१०।५२	०।४२।४०
श्रीरङ्गपट्टम् (मैसूर)	१२।२६	१। ३।०
सरदारशहर(बीकानेर)	२८।२७	१।३२।०
सवाईमाधोपुर(जैपुर)	२५।५८	१। ५।०
सहारनपुर(यू०पी०)	२९।५८	१।५४।०
सागर (सी० पी०)	२३।५०	१। ०।०
सारनगढ़(सी०पी०)	२१।३६	०। ९।१०
सिताराम	१७।५२	१।३०।०
सिकन्दराबाद(हैदरा०)	१७।२७	०।४५।२०
सियालकोट(पञ्जाब)	३२।३१	१।२४।०
सिरोंज(राजपुताना)	२४।६	०।५३।०
सिलोन	८।०	०।२०।०
सिरोहिराज्य(राज०)	२५।५३	१।४१।०
सिहोरा	२३।३२	१। ०।०
सीतापुर (यू० पी०)	२७।३२	०।२४।१०
सुल्तांँपुर (यू०पी०)	२६।१६	०।१४।०
सूरतगढ़ (बीकानेर)	२९।१९	१। ३।३०
सूरत (बम्बई)	२१।१२	१।४१।०
सैलाना (c. i.)	२३।३१	१।२०।०
सोलापुर (बम्बई)	१७।४०	१।११।०
सोहागपुर(सी०पी०)	२२।४२	०।४७।१०
हमीरपुर (यू० पी०)	२५।५८	०।२८।०
हरदी (सी० पी०)	२२।३१	०।५८।०
हरदोई (यू० पी०)	२७।२३	०।२८।०
हरिहर (मैसूर)	१४।३१	१।११।२०
हरिद्वार (यू० पी०)	२९।५८	०।४८।०
हाटा (बम्बई)	२५।४९	२।२१।४०
हातरस (यू० पी०)	२७।३६	०।४८।०
हिन्दूपुर (मद्रास)	१३।४९	०।३४।४०
हिगोली (हैदराबाद)	१९।४३	०।५८।१०
हिसार (पञ्जाब)	२९।१०	१।१२।२०
हुबली (बम्बई)	१५।२०	१।४८।९
हैदराबाद दक्षिण	१७।२०	०।४९।३०
हैदराबाद सिन्ध	२५।२५	२।२२।३०
होसंगाबाद(सी०पी०)	२२।४६	०।५२।३०
होशियारपुर(पञ्जाब)	३१।३२	१।१०।३०

अक्षांशपर से सारणी द्वारा पलभाज्ञान की विधि—

पलांशतश्चेदधिकं कलाद्यं व्यतीतभोग्याक्षप्रमान्तरघ्नम् ।
षष्ठ्या हृतं तत्फलयुग्गता याऽक्षभा भवेत्साऽभिमता सुखार्थम् ॥११॥

गत अंश और ऐष्य अंश सम्बन्धि पलभाओं के अन्तर को शेष कला से गुणा कर के ६० का भाग देने पर जो लब्धि आवे उसको गत अक्षांश सम्बन्धी पलभा में यथास्थान जोड़ देने से अभीष्ट पलभा हो जाती है ॥११॥

उदाहरण—

अयोध्या के अक्षांश २६°।४८′ पर से पलभाज्ञान करना है तो आगे दी हुई पलभा सारिणी में २६ अक्षांश का फल ५।५१।७ एवं २७ अक्षांश सम्बन्धी फल ६।६।५० इन दोनों फलों के अन्तर (६।६।५०)—(५।५१।७)=०।१५।४३ को ४८′ से गुणा कर के गुणनफल = ४८ (०।१५।४३)=७५४।२४ में ६० का भाग दिया तो लब्धि = $\frac{७५४।२४}{६०}$ = १२।२४ आई। इसको गतांश सम्बन्धी पलभा ५।५१।७ में जोड़ दिया तो स्वल्पान्तर से (६।३।३१) = ६।४ अयोध्या की अङ्गुलात्मिका पलभा हुई। इसी को अक्षभा या विषुवती भी कहते हैं।

पलभासारिणी—

अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा
१	०।१२।३४	१५	३।१२।५४	२९	६।३९। ४	४३	११।११।२४
२	०।२५। ९	१६	३।२६।२४	३०	६।५५।४१	४४	११।३५।२४
३	०।३७।४४	१७	३।४०। ५	३१	७।१२।३६	४५	१२। ०। ०
४	०।५०।२१	१८	३।५३। ६	३२	७।२९।५३	४६	१२।२५।३७
५	१। ३। ०	१९	४। ७।५५	३३	७।४७।३१	४७	१२।५२। ४
६	१।१५।१४	२०	४।२२। १	३४	८। ५।३८	४८	१३।१९।३४
७	१।२८।२३	२१	४।३६।२२	३५	८।२४। ७	४९	१३।४८।१८
८	१।४१।१०	२२	४।५०।५३	३६	८।४३। ५	५०	१४।१८। ३
९	१।५४। ०	२३	५। ५।३८	३७	९। २।२५	५१	१४।४९। ८
१०	२। ६।५४	२४	५।२०।३१	३८	९।२२।३०	५२	१५।२४।३२
११	२।१९।५५	२५	५।३२।४२	३९	९।४३। १	५३	१५।५५।३०
१२	२।३३। ०	२६	५।५१। ७	४०	१०।३।३६	५४	१६।३५। १
१३	२।४६।४१	२७	६। ६।५०	४१	१०।२८।४८	५५	१७। ८।३४
१४	२।५९।२८	२८	६।२२।४८	४२	१०।४८।१८		

लङ्कोदय पर से स्वोदयज्ञान (करणकुतूहले)—

लङ्कोदया नागतुरङ्गदस्रा गोङ्काश्विनो रामरदा विनाड्यः ।
क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ताः ॥
मेषादिषण्णामुदयाः स्वदेशे तुलादितोऽमी च षडुत्क्रमस्थाः ॥ १२ ॥

२७८ पल मेष का, २९९ पल वृष का, ३२३ पल मिथुन का क्रमसे

लङ्कोदयमान होता है। एवं उत्क्रमसे ३२३ पल कर्क का, २९९ पल सिंह का, २७८ पल कन्या का लङ्कोदय मान होता है। यही उत्क्रम से तुलादि ६ राशियों का मान भी होता है। इन मेषादि के लंकोदय मानों को क्रम तथा उत्क्रम से रखके उनके सामने मेषादि के चरखण्डों को उसी रीति (क्रम तथा उत्क्रम) से रख के पहले ३ स्थानों में घटा देने से फिर ३ स्थानों में जोड़ देने से मेषादि ६ राशियों का स्वोदय मान हो जाता है। उन्हीं को उलटे तुलादि ६ राशियों का मान समझना चाहिये।

आजमगढ़ का उदयमान—

लङ्कोदय चर	
२७८—५८ = २२०	मेष, मीन
२९९—४७ = २५२	वृष, कुंभ
३२३—१९ = ३०४	मिथुन, मकर
३२३ + १९ = ३४२	कर्क धनु
२९९ + ४७ = ३४६	सिंह, वृश्चिक
२७८ + ५८ = ३३६	कन्या, तुला

अत एव मदीयं पद्यम्—

शून्याश्विदस्रा यमबाणदस्रा वेदाभ्ररामा यमवेदरामाः।
तर्काब्धिरामा रसरामरामा मेषादितस्तौलित उत्क्रमात्स्युः॥ १२॥

अयनांश बनाने की रीति—

भूनेत्रवेदो ४२१ नशकः स्वदशांशविहीनितः।
षष्ठ्या भक्तोऽयनांशाः स्युर्वर्षारम्भे स्फुटाः खलु॥ १३॥
त्रिभार्कराशिना स्वार्धयुक्तेन विकलादिना।
युक्तास्तात्कालिकास्ते स्युः स्पष्टा गणितविद्वर॥ १४॥

वर्तमान शकाब्द में ४२१ घटा के जो शेष बचे उस (शेष) का दशवां भाग उसी में घटा कर ६० का भाग देने से लब्धि वर्षारम्भकालीन (मेष-संक्रान्ति के दिन का) स्पष्ट अयनांश होता है।

यदि सूर्य की राशियां भी बीत गयी हों तो राशि संख्या को ३ से गुणा कर के उस में उसी का आधा जोड़ने से जो विकला हो उसको वर्षारम्भ-कालीन स्पष्टायनांश की विकला में जोड़ देने से तात्कालिक स्पष्टायनांश हो जाता है॥ १३–१४॥

उदाहरण—

वर्तमान शकाब्द*१८५५ में ४२१ घटाया तो १४३४ शेष बचा। इस १४३४

---

* सौरात्मक शकाब्द मेषसंक्रान्ति से प्रारम्भ होगा। अतः गत शकाब्द से ही अयनांश का उदाहरण दिया गया है। इसी भाँति सर्वत्र चन्द्रवत्सरारम्भ हो जाने पर सौरवत्सरारम्भ से पूर्व का इष्टकाल हो तो करना चाहिये।

में इसी १४३४ का दशमांश = $\frac{१४३४}{१०}$ = १४३।२४ घटा के ६० का भाग दिया तो लब्धि = $\frac{१४३४-(१४३।२४)}{६०}$ = $\frac{१२९०।३६}{६०}$ = २१°।३०'।३६" शकारम्भकाल का स्पष्ट अयनांश हुआ।

अब स्पष्ट सूर्य ११।२०°।५०'।१०" की राशि संख्या ११ को ३ से गुणा कर दिया तो ३ × ११=३३ हुआ। इस ३३ में इसी का आधा $\frac{३३}{२}$=१७ जोड़ दिया तो ५० विकला हुई। इस ५० विकला को वर्षारम्भकालीन स्पष्टायनांश २१°।३०'।३६" में यथा स्थान जोड़ दिया तो तात्कालिकस्पष्टायनांश २१°।३१'।२६" हुआ।

अयनांश बनाने की दूसरी रीति—

भूनेत्रवेदोनशकस्त्रिघ्नः खाभ्राश्विभिर्हृतः।
वर्षारम्भेऽयनांशाः स्युः स्फुटा गणितकोविदः॥
भागीकृतो भगो भक्तः खाभ्रवेदैः फलं भवेत्।
कलार्द्यं तेन संयुक्ताः स्फुटास्तात्कालिकाः स्मृताः॥

शक संख्या १८५५ में ४२१ घटाया तो १४३४ शेष हुआ। इस १४३४ को ३ से गुणा करके २०० से भाग दिया तो लब्धि = $\frac{१४३४×३}{२००}$ = २१°।३०'।३६" शकारम्भकाल का स्पष्टायनांश हुआ। अब स्पष्ट सूर्य ११।२०।५० का अंश ३५१ बनाके ४०० का भाग दे दिया तो लब्धि = $\frac{३५१}{४००}$ = ०'।५३" कलादि हुई। इस ०'।५३" को वर्षारम्भकालिकस्पष्टायनांश में यथा स्थान जोड़ दिया तो २१°।३०'।३६" + ०'।५३" = २१°।३१'।२९" तात्कालिकस्पष्टायनांश* हुआ।

लग्न स्पष्ट करने की रीति—

तात्कालिकः सायनभागसूर्यः कार्यस्तथा तद्गतभोग्यभागाः।
स्वीयोदयघ्ना विहृताः खरामैर्लब्धं विशोध्यं घटिकापलेभ्यः॥१५॥
यातैष्यकान् राश्युदयान् ततश्च शेषं वियद्राम ३०गुणं विभक्तम्।
अशुद्धराशेरुदयेन, लब्धमशुद्धशुद्धाऽजमुखेषु भेषु॥
हीनं युतं तद्धि भवेद्धिलग्नं स्पष्टं स्वदेशेऽयनभागहीनम्॥१६॥

जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्पष्ट सूर्य में तात्कालिक स्पष्टायनांश जोड़ देने से तात्कालिक सायनार्क होता है। उस तात्कालिक सायनार्क के भुक्त या भोग्य अंशादि को स्वदेशीय उदयमान से गुणा करके ३० से भाग देने पर लब्ध पलादि भुक्त या भोग्य काल होता है। (अर्थात् भुक्तांश को स्वोदयमान से गुणा करके ३० से भाग देने पर भुक्तकाल और भोग्यांश को स्वोदय से गुणा करके ३० से भाग देने पर भोग्यकाल होता है। इस भुक्त या भोग्य काल को इष्ट घटी पल में घटा के जो शेष बचे उस में भुक्त या भोग्य राशियों के उदयमानों को (जहाँ तक घट सके)

---

* पहले अयनांश से यह भिन्न इसलिये है कि इसमें अंश सम्बन्धी फल भी ले लिया गया है।

घटाना (अर्थात् यदि भुक्तांश पर से लग्न स्पष्ट करना हो तो सावनेष्ट काल को ६० में घटा के जो शेष घटी पल हो उस में भुक्त काल घटा के शेष में गत राश्युदय मानों को घटाना। यदि भोग्यांश पर से लग्न साधन करना हो तो सावनेष्ट घटी पल में ही भोग्यकाल घटा के शेष में ऐष्य राश्युदय मानों को घटाना) चाहिये। अब शेष को ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान से भाग देने पर जो लब्धि अंशादिक आवे उसको क्रम से अशुद्धराशि में घटाने और शुद्ध राशि में जोड़ने से (अर्थात् भुक्त क्रिया में अशुद्धराशिसंख्या में घटाने और भोग्य क्रिया में शुद्धराशिसंख्या में जोड़ने से) सायन स्पष्ट लग्न होता है। इसमें अयनांश घटा देने से अपने २ देश का स्पष्ट लग्न हो जाता है ॥ १५-१६ ॥

उदाहरण—

तात्कालिक स्पष्टसूर्य = ११।२०°।५८'।१०"

" अयनांश = २१°।३१'।२९"

" सायनार्क = ०।१२°।२९'।२९"

भोग्यांश = १७।३०।३१ इस का मेष के २२० उदयमान से गुणा करके ३० का भाग देने पर।

$$लब्धि = \frac{१७।३०।३१ \times २२०}{३०}$$

$$= \frac{३७४०।६६००।६८२०}{३०}$$

$$= \frac{३८५१।५३।४०}{३०} = १२८।२३।४७।२०$$

इस लब्धि को इष्ट घटी पल (१३।५५) ६० = ८३५ में घटाने से

शेष = ८३५—(१२८।२३।४७।२०)

= ७०६।३६।१२।४० इस में वृष और मिथुन का मान (२५२ + ३०४ = ५५६) घटाने पर

शेष = ७०६।३६।१२।४०—५५६

= १५०।३६।१२।४०

इसको ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान ३४२ से भाग देने पर

$$लब्धि = \frac{१५०।३६।१२।४० \times ३०}{३४२}$$

$$= \frac{४५१९।८।६।२०}{३४२} = १३°।१२'।३९"$$ हुई।

इसको शुद्धराशिसंख्या ३ में जोड़ दिया तो—

सायन स्पष्ट लग्न = ३।१३।१२।३९ हुआ।

अयनांश घटाया तो स्पष्ट लग्न = ३।१३ ।१२'।३९"—२१°।३१'।२९"

= २।२१°।४१'।१०" हो गया।

भुक्तांश पर से स्पष्टलग्न बनाने का उदाहरण—

सायनार्क = ०।१२°।२९'।२९"

$$\frac{\text{भुक्तांश} \times \text{स्वोदय}}{\text{३०}} = \frac{\text{(१२°।२९'।२९") २२०}}{\text{३०}}$$

$$= \frac{\text{२६४०।६३८०।६३८०}}{\text{३०}}$$

$$= \frac{\text{२७४८।६।२०}}{\text{३०}} = \text{९१।३६।१२।४०}$$

इष्ट घटी पल६०-(१३।५५) = ४६।५ = २७६५ पल में घटाने से—

शेष = २७६५-(९१।३६।१२।४०)

= २६७३।२३।४७।२० इसमें उलटे मीन से लेकर सिंह तक का मान २४८२ घटाने पर

शेष = २६७३।२३।४७।२०-२४८२

= १९१।२३।४७।२०

इस शेष को ३० से गुणा करके अशुद्धोदयमान ३४२ से भाग देने पर

$$\text{लब्धि} = \frac{\text{(१९१।२३।४७।२०) ३०}}{\text{३४२}}$$

$$= \frac{\text{५७४१।५३।४०}}{\text{३४२}} = \text{१६°।४७'।२१ इसको}$$

अशुद्धराशिसंख्या ४ में घटा देने पर शेष—

सायनलग्न = ४-(१६°।४७'।२१")

= ३।१३°।१२'।३९"

स्पष्टलग्न = सायनलग्न—अयनांश

= ३।१३°।१२'।३९"—२१°।३१'।२९"

= २।२१°।४१'।१०" हुआ।

भुक्त भोग्याल्पत्व में विशेष—

भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालान्न विशुद्धयेद्यदा तदा।
स्वेष्टं त्रिंशद्गुणं स्वीयोदयाप्तं यल्लवादिकम्॥
हीनं युक्तं रवौ कार्यं लग्नं तात्कालिकं भवेत्॥ १७॥

यदि भुक्त या भोग्य पलादि इष्ट घटी पल में न घटे तो इष्ट पलादि को ३० से गुणा करके स्वोदय मान से भाग देने से जो लब्धि अंशादि आवे उसको (भुक्तांश पर से लग्न साधन किया जाता हो तो) स्पष्ट सूर्य में घटा देने से (यदि भोग्यांश पर से लग्न स्पष्ट किया जाता हो तो) स्पष्ट सूर्य जोड़ देने से तात्कालिक स्पष्ट लग्न हो जाता है॥ १७॥

उदाहरण—

कल्पित सायन सूर्य = ०।१२°।१७'।३५"

भोग्यांश = १७°।४२'।२५"

$$\text{भोग्यकाल} = \frac{\text{(१७°।४२'।२५") २२०}}{\text{३०}}$$

$$= \frac{\text{३८९५।३१।४०}}{\text{३०}} = \text{१२९।५१।३।२०}$$

यह पलादि भोग्यकाल कल्पित इष्ट घटी पल १।४५ (=१०५ पल) में नहीं घटता

इसलिये इष्ट घटीपल=१०५ को ३० से गुणा करके स्वोदयमान=२२० से भाग देनेपर

$$\text{लब्धि} = \frac{१०५\times३०}{२२०} = \frac{१०५\times३}{२२} = \frac{३१५}{२२} = १४^\circ।१९'।५''\text{ अंशादि हुई।}$$

इस अंशादि को स्पष्ट सूर्य=११।२०।४६।६ में जोड़ दिया तो राश्यादि स्पष्ट लग्न—

११।२०°।४६'।६" + १४°।१९।५" = ०।५°।५'।११" हुआ।

उक्त प्रकार के उदाहरण के लिये २०वें श्लोक के दशम साधन का उदाहरण देखिये।

काशी में तथा २५°।१८' अक्षांशदेशों में केवल सारणी ही पर से पूज्यपाद परमगुरुवर्य म०म०पं० श्रीसुधाकरद्विवेदीकृत स्पष्ट लग्न साधन की रीति—

दृश्यसूर्यवशतो घटीपलं यत्तदिष्टसहितं तदुद्भवम् ।
भादिकं त्वयनभागहीनितं चन्द्रचूडनगरे भवेत्तनुः ॥ १८ ॥

सायनार्क के राशि-अंश के सामने के कोठे में जो घटीपल हो एवं कला विकला सारणी में जो पलादि हो उनको यथास्थान (एक एक स्थान हटा कर) जोड़ देने से जो घटी पल विपलादि हो उसमें इष्टकाल के घटीपलादि को जोड़ देने से जितना घटीपलादि हो उतने घट्यादि में अंश सारणी में जिस राशि अंश के सामने का घट्यादि घट जाय उतने अंश लग्न के बीते हुए होते हैं। पुनः घटाने पर जो पलादि शेष बचे उनमें कला सारणी में जिस राशिकला के सामने का पलादि घट जाय उतनी कला लग्न की बीती हुई होती है। एवं विकला का ज्ञान भी करके सबों (अंश, कला, विकलाओं) को अपने २ स्थान में रख के जोड़ देने से राश्यादि सायनस्फुट लग्न होता है। इसमें अयनांश घटा देने से स्पष्ट लग्न काशी में हो जाता है ॥ १८ ॥

उदाहरण—

स्पष्ट सूर्य ११।२०°।५८'।०" और स्पष्ट अयनांश २१°।३१'।२९" दोनों को यथा स्थान जोड़ दिया तो सायन सूर्य हो गया ०।१२°।२९'।२९"। *अब सायन सूर्य के सामनें का

राशिअंश का घट्यादि = १।२९।१२
राशिकला का पलादि = ३।२५।३४
राशिविकला का विपलादि = ३।२५।३४
योग = १।३२।५१।२।३४
इसमें इष्ट घटी = १३।५५
जोड़ दिया तो योग = १५।२७।५१।९।३४ हुआ। अब इस में कर्क के १२° के सामने का घटी पल (१५।१८।०) घट गया तो शेष पलादि ९।५१।९।३४ बचा। फिर इस पलादि में राशिकला सारणी में ५२ कला सम्बन्धी पलादि ९।४९।२० घटाया तो शेष विपलादि १।४९।३४ बचा। फिर इस में राशिविकला सारणी में ९ विकला के सामने का विपलादि १।४२।० घट गया तो शेष ७।३४ प्रतिविपल बचा। इस को स्वल्पान्तर से छोड़ दिया। अब सारणी में १२°।५२'।९" के सामने के फल घट गये हैं इस लिये सायनलग्न ३।१२°।५२'।९" हुआ इसमें अयनांश घटा दिया तो काशी का स्पष्टलग्न ३।१२°।५२'।९" (२१°।३१'।२९')=२।२१°।२०'।४०" हो गया।

---

* स्वल्पान्तर से यही काशी का स्पष्ट सूर्य मान लिया गया है।

काशी में (अर्थात् २५°।१८' अक्षांश पर) राश्यंशफल—

	राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मेष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
७	०	०	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३३	४४	५१	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५०	५८	५	१३	२०	२८	३५
२६		०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
०	वृष	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
८	१	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४	४१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९
३०		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
०	मिथुन	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१०	२	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१
८		०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४८	५२
०	कर्क	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८
११	३	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०
२०		०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	३०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
०	सिंह	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
११	४	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
२६		०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
०	कन्या	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९
११	५	२७	३६	४७	५८	९	०	३२	४३	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३७	४८
१०		०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०

काशी में (अर्थात् २५°।१८' अक्षांश पर) राश्यंशफल—

	राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५
११	६	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३
१०		०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२८	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०
०	वृश्चिक	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१
११	७	३५	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६
२६		०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४
०	धनु	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६
११	८	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६
२०		०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
०	मकर	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१
१०	९	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१
८		०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२
०	कुम्भ	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६
८	१०	२	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५१	०	८
३०		०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०
०	मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
७	११	१७	२४	३१	३९	४६	५४	१	९	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२
२६		०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४

कला-विकला फल—

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	मीन ११	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
		७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१	५८	६	२३	२१	२८	३६	४३	५०	५८	५	१३	२०	२८	३५	४३
		२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०
वृष १	कुम्भ १०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४
		८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५९	७	१६	२४	३३	४१	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८	६	१५
		३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
मिथुन २	मकर ९	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५
		१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	४
		८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
कर्क ३	धनु ८	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५
		११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	४८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०
		२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सिंह ४	वृश्चिक ७	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५
		११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	२१	४३
		२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०
कन्या ५	तुला ६	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५
		११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५
		१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०

कला-विकला फल—

		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मेष	मीन	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७
०	११	५०	५७	५	१२	२०	२७	३५	४२	४९	५७	४	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	४	११	१९	२६	३३	४१	४८	५६	३	११	१८	२६
		२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४१	८	३४	०
वृष	कुम्भ	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
१	१०	२३	३२	४०	४९	५७	६	१४	२३	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	३९	४८	५६	५	१३	२२	३०	३९	४७	५६	४	१३	२१	३०
		३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
मिथुन	मकर	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०
२	९	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२५	३५	४५	५५	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८
		८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	३२	४०	४८	५६	०
कर्क	धनु	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
३	८	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०
		२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सिंह	वृश्चिक	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
४	७	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६
		२६	५८	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०
कन्या	तुला	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
५	६	४६	५७	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३३	४४	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०
		१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०

नतोन्नतज्ञान—

तदुन्नतं यदल्पं स्याद् द्युनिशागतशेषयोः ।
तेनोनितं दिननिशोरर्द्धं तन्नतसंज्ञकम् ॥ १९ ॥

दिन रात्रि दोनों की गतघटी और शेषघटी इन दोनों में जो अल्प (कम) हो उसको उन्नतकाल कहते हैं। उस उन्नतकाल को दिनदल या रात्रिदल में घटा देने से शेष नतकाल होता है ॥ १६ ॥

उदाहरण—

सावन इष्टकाल १३।५५ और दिनमान ३०।५० है। यहाँ दिनशेष १६।५५ से दिनगत १३।५५ कम है। इसलिये दिनगत ही उन्नतकाल हुआ। इसको दिनदल १५।२५ में घटा दिया तो शेष १५।२५–(१३।५५) = १।३० दिन का घट्यादि पूर्वनत काल हुआ।

दशमसाधन की रीति—

पलीकृतात्पूर्वपश्चान्नताल्लङ्कोदयैश्च यत् ।
भुक्तभोग्यप्रकारेण लग्नं तद्दशमाभिधम् ॥
ततश्चतुर्थं विज्ञेयं मध्ये षड्भाधिके कृते ॥ २० ॥

पूर्व नत हो तो लङ्कोदय पर से भुक्त प्रकार द्वारा तथा परनत हो तो लङ्कोदय पर से भोग्य प्रकार द्वारा पूर्ववत् लग्न साधन करना, तो वही दशमलग्न होगा। उसमें ६ राशि जोड़ देने से चतुर्थ भाव हो जाता है। (यदि रात्रि का नतकाल हो तो सूर्य में ६ राशि जोड़ के शेष क्रिया पूर्ववत् करनी चाहिये) ॥ २० ॥

उदाहरण—

सायनसूर्य = ०।१२°।२९'।२९"

भुक्तांश = १२°।२९'।२९"

$$\frac{\text{भुक्तांश} \times \text{लङ्कोदय}}{\text{३०}} = \frac{(\text{१२।२९।२९})\ \text{२७८}}{\text{३०}}$$

$$= \frac{\text{३४७२।३६।२२}}{\text{३०}} = \text{११५।४५।१२।४४}$$

यह पलादि भुक्तकाल पूर्वनतपल ९० में नहीं घटता इस लिये १७ वें श्लोक के अनुसार नतपल ९० को ३० से गुणा कर के मेष के लङ्कोदयमान २७८ से भाग देने पर लब्धि = $\frac{\text{९०} \times \text{३०}}{\text{२७८}}$ = ९।४२।४४। अंशादि हुई। इसको स्पष्ट सूर्य में घटाया तो दशम लग्न स्पष्ट = ११।२०°।५८'।०"—९°।४२'।४४"

= ११।११°।१५'।१६" हुआ।

सब देशों के लिये केवल सारणी पर से दशमलग्न साधन की रीति—

दृश्यार्काद्धटिकाद्यं यत्पूर्वापरनतोनयुक् ।
तज्जं भाद्यं चलांशोनं खभं सार्वत्रिकं भवेत् ॥ २१ ॥

दृश्य सूर्य (सायन सूर्य) के राशि-अंश के सामने के कोठे में जितना घटी पल हो उसको एक स्थान में रखके, त्रैराशिक गणित द्वारा कला विकला सम्बन्धी पल का आनयन करके पूर्व स्थापित घटी पल में यथास्थान रख कर जोड़ देवे। उसमें यदि पूर्वनत हो तो नतकाल को घटाके परनत हो तो जोड़ के जो घट्यादि प्राप्त हो उसमें सारणी में लिखित जिस राशि-अंश के सामने का घटी पल घट जाय उतने राशि अंश दशम-लग्न के गत होते हैं। फिर घटाने पर जो शेष बचे उस पर से त्रैराशिक गणित द्वारा कला विकला का आनयन करके यथास्थान पूर्व प्राप्त राशि अंश में जोड़ देने से सायन दशम लग्न होता है। उसमें अयनांश घटा देने पर सब देशों के लिये दशम लग्न स्पष्ट हो जाता है ॥ २१ ॥

उदाहरण—

सायन सूर्य ०।१२°।२९'।२९" के राशि और अंश के सामने के घट्यादिफल १।५१।१२ में त्रैराशिक गणित द्वारा आनीत कलाविकलासम्बन्धी पलादि फल

$$= \frac{(\text{पलादि} = ९।१६)(२९'।२९'')}{६०'}$$

$$= \frac{(९।१६)१७६९''}{३६००''}$$

$$= \frac{१६३९२।४४}{३६००''} = ४।३३।१२।४४$$ को यथास्थान रख कर जोड़ दिया।

१।५१।१२

तो सायन सूर्य के राश्यादि सम्बन्धी घट्यादि फल = $\frac{४।३३।१२।४४}{१।५५।४५।१२।४४}$ हुआ।

इसमें घट्यादि पूर्वनत को घटाया तो शेष = (१।५५।४५।१२।४४)–(१।३०)

= ०।२५।४५।१२।४४ बचा।

इस में ० राशि २ अंश के सामने का घट्यादि = ०।१८।३२ घटता है। अतः ०राशि २ अंश सायन दशम हुआ। और घटाने पर—

०।२५।४५।१२।४४

०।१८।३२

७।१३।१२।४४ पलादि शेष बचा।

फिर इस पर से त्रैराशिक गणित द्वारा जो कलादि फल = $\frac{६०''(७।१३।१२।४४)}{९।१६}$

$= \frac{३५९९२।४४}{५५६} = ४६'।४५''$

आया उसको राश्यादि सायन दशम के आगे यथास्थान रख के अयनांश घटा दिया तो राश्यादि स्पष्ट दशम लग्न = ०।२°।४६'।४५"—(२१'।३१।२९")।

= ११।११°।१५'।१६" हो गया।

सायनार्कवश से दशम सारणी—

	राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मेष	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
९	०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८
१६		०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
०	वृष	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९
९	१	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
५८		०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
०	मिथुन	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४
१०	२	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	४	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९
४६		०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४
०	कर्क	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०
१०	३	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२
४६		०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४
०	सिंह	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५
९	४	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	२२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
५८		०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
०	कन्या	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९
९	५	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१२	२२	३२	४१	५०
१६		०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

सायनार्कवश से दशम सारणी—

	राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
९	६	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८
१६		०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४
०	वृश्चिक	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९
९	७	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
५८		०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
०	धनु	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४
१०	८	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९
४६		०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४
०	मकर	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०
१०	९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२
४६		०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४९	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४
०	कुम्भ	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
९	१०	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
५८		०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
०	मीन	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९
९	११	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०
१६		०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

बिना नतकाल के ही दशमलग्नसाधन का प्रकार—

मेषादिशुद्धोदययुक्शेषाच्छोध्या मृगादिकाः ।
लङ्कोदयास्ततः शेषं वियद्रामैश्च सङ्गुणम् ॥ २२ ॥
अशुद्धलङ्कोदयकैर्भक्तं लब्धं लवादिकम् ।
मेषादिशुद्धभैर्युक्तं चलांशोनं खभं भवेत् ॥ २३ ॥

शेष पलादि में मेष से लेकर शुद्ध राशितक के स्वोदयमानों को जोड़के जितना पलादि हो उसमें मकरादि से लङ्कोदय मानों को जहाँ तक घट जाय घटा देने जो शेष बचे उसको ३० से गुणा कर के अशुद्ध लङ्कोदय मान से भाग देने पर जो अंशादि लब्ध हो उसमें मेषादि शुद्ध लङ्कोदय राशि संख्या को जोड़ के अयनांश घटा देने से स्पष्ट दशमलग्न हो जाता है ॥ २२-२३ ॥

उदाहरण—

१५-१६ वें श्लोक के अनुसार भोग्य प्रकार से आनीत अशुद्ध राशि (कर्क)
का शेष = १५०।३६।१२।४०

मेष, वृष और मिथुन के स्वोदय पल = २२० + २५२ + ३०४ = ७७६

∴ शेषपलादि + मेष + वृष + मिथुन = (१५०।३६।१२।४०) + ७७६
= ९२६।३६।१२।४०

इस में मकर, कुम्भ और मीन के लङ्कोदयमानों (३२३ + २९९ + २७८) = ९००
को घटाने पर शेष = (९२६।३६।१२।४०) - ९००
= २६।३६।१२।४०

फिर $\frac{\text{शेष} \times ३०}{\text{अशुद्धलङ्कोदयमान}} = \frac{(२६।३६।१२।४०) ३०}{२७८}$

$= \frac{७९८।६।२१}{२७८}$

= २°।५२'।१५"

फिर शुद्धराशिसंख्या + लब्धांशादि = ०।२°।५२'।१५"

अयनांश = २१°।३१'।२९"

घटाया तो स्पष्टदशम = ११।११°।२०'।४६" हुआ ।

१२ भाव साधन--

अथ लग्नोनतुर्यस्य षष्ठांशेन युतं तनुः ।
सन्धिः स्यादेवमग्रेऽपि षष्ठांशस्यैव योजनात् ॥ २४ ॥
त्रयः ससन्धयो भावाः षष्ठांशोनैकयुक्सुखात् ।
अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्धयुक्ताः परेऽपि षट् ॥ २५ ॥

चतुर्थ भाव में लग्न को घटाने पर जो शेषबचे उसमें ६ का भाग देना

लब्ध जो अंशादि आवे उसको लग्न में जोड़ देने से लग्न की सन्धि होती है। एवं षष्ठांश को तनुसन्धि में जोड़ देने से द्वितीयभाव; द्वितीयभाव में उसी षष्ठांश को जोड़ने से द्वितीयभाव की सन्धि होती है। एवं आगे भी इसी क्रम से उसी षष्ठांश को जोड़ देने से सन्धि समेत ३ भाव हो जाते हैं। उसी षष्ठांश को एक राशि में घटा कर जो शेष बचे उसको चतुर्थ भाव से आगे क्रम से जोड़ने से आगे के भी सन्धिसहित ३ भाव बन जाते हैं। एवं इन्हीं ६ भावों में ६, ६ राशि जोड़ देने से शेष भी (सप्तम भाव से लेकर द्वादशभाव पर्यन्त) ६ भाव बन जाते हैं॥ २४–२५॥

उदाहरण—

चतुर्थ भाव। ५। ११ । १५'। १६" में लग्न २। २१°। ४१'। १०" को घटा के शेष में ६ का भाग देने से

लब्ध अंशादि = (५।११°।१५'।१६")−(२।२१°।४१'।१०") / ६
= २।१९°।३४'।६" / ६ = १३°।१५'।४१" षष्ठांश हुआ।

इस षष्ठांश को उपर्युक्त नियम से जोड़ दिया तो १२ भाव हो गये।

१२ भाव—

प्रथम	सं०	द्वितीय	सं०	तृतीय	सं०	चतुर्थ	सं०	पञ्चम	सं०	षष्ठ	सं०
२ २१ ४१ १०	३ ४ ५६ ५१	३ १८ १२ ३२	४ १ २८ १३	४ १४ ४३ ५४	४ २७ ५९ ३५	५ ११ १५ १६	५ २७ ५९ ३५	६ १४ ४३ ५४	७ १ २८ १३	७ १८ १२ ३२	८ ४ ५६ ५१
सप्तम	सं०	अष्टम	सं०	नवम	सं०	दशम	सं०	एकाद	सं०	द्वादश	सं०
८ २१ ४१ १०	९ ४ ५६ ५१	९ १८ १२ ३२	१० १ २८ १३	१० १४ ४३ ५४	१० २७ ५९ ३५	११ ११ १५ १६	११ २७ ५९ ३५	० १४ ४३ ५४	१ १ २८ १३	१ १८ १२ ३२	२ ४ ५६ ५१

विशेष (श्रीपतिपद्धति से)

वदन्ति भावैक्यदलं हि सन्धिस्तत्र स्थितः स्यादफलो ग्रहेन्द्रः।
ऊनस्तु सन्धेर्गतभावजातानागामिजं चाभ्यधिकः करोति ॥२६॥
भावांशतुल्यः खलुः वर्तमानो भावोद्भवं पूर्णफलं विधत्ते।
भावोनके वाभ्यधिके च खेटे त्रैराशिकेनाऽत्र फलं प्रकल्प्यम् ॥२७॥

भावप्रवृत्तौ हि फलप्रवृत्तिः पूर्णं फलं भावसमांशकेषु ।
ह्रासक्रमाद्भावविरामकाले फलस्य नाशो गदितो मुनीन्द्रैः ॥२८॥
जन्मप्रयाणव्रतबन्धचौलनृपाभिषेकादिकरग्रहेषु ।
एवं हि भावाः परिकल्पनीयास्तैरेव योगोत्थफलं प्रकल्प्यम् ॥२९॥

दो भावों के योग के आधे को सन्धि कहते हैं। सन्धि में स्थित ग्रह फलदान में समर्थ नहीं होता। सन्धि से कम ग्रह पूर्वभाव का और सन्धि से अधिक ग्रह अग्रिमभाव का फल देता है। भाव के अंश तुल्य ग्रह हो तो भाव सम्बन्धी पूर्णफल देता है। भावसे कम याअधिक ग्रह हो तो त्रैराशिक गणित द्वारा फल की कल्पना करे। भाव प्रवृत्ति में फलकी प्रवृत्ति और भावकी पूर्णता में फल का पूर्णत्व होता है। एवं ह्रासक्रम से भावके विराम में फल का अन्त होता है ऐसा मुनियों ने कहा है। जन्म, यात्रा, यज्ञोपवीत, मुण्डन, राज्याभिषेक, विवाह इत्यादि कार्य्यों में इसी प्रकार भाव साधन करना चाहिये। और इन्हीं भावों पर से योगोत्थफलों का आदेश करना चाहिये॥ २६-२६ ॥

आज कल के कुछ पण्डितों ने श्रीपतिपद्धति जातकपद्धति (केशवी) इत्यादि बड़े २ प्रामाणिक ग्रन्थों को यवनमतानुवादित ग्रन्थ बतलाते हुए इस भावानयन विधि को अशुद्ध कहना और श्रीपतिभट्ट, केशवदैवज्ञ, ज्ञानराजदैवज्ञ प्रभृति प्रकाण्ड विद्वानों को ग्रन्थानधिकारी सिद्ध करते हुए—

'लग्नमारभ्य सर्वत्र राशिवृद्ध्या यथाक्रमम् ।
भावाः सर्वेऽवगन्तव्याः सन्धी राश्यर्धयोजनात् ॥'

इस स्थूल भावानयन को ही शुद्ध भावानयन बताना आरम्भ कर दिया है। किन्तु ऐसा कहना उन्हीं लोगों को शोभता है। क्योंकि इस स्थूल भावानयन को लिखते हुए शूरमहाठ श्रीशिवराजदैवज्ञ ने अपने ज्योतिर्निबन्ध नामक पुस्तक में स्वयं सुस्पष्ट लिख दिया है—

'एतस्थूलं भावानयनं सूक्ष्मं तु जातकपद्धतेरवगन्तव्यम् ॥' इति ।

कमलाकर भट्ट ने भी अपनी सिद्धान्ततत्त्वविवेक नाम की पुस्तक में इस पर विचार किया है। किन्तु उदयान्तर स्फुटभोग्यखण्ड इत्यादि की भांति इसका विचार भी उन्मत्तप्रलापवत् हो गया है। इति दिक्।

ग्रहों की शयनाद्यवस्था—

खेटर्क्षसंख्या खेटघ्नी खेटांशगुणिता पुनः ।
जन्मर्क्षाङ्केष्टयुक्ताऽर्कतष्टाऽवस्था क्रमाद्भवेत् ॥ ३० ॥
शयनं चोपवेशं च नेत्रपाणिः प्रकाशनम् ।
गमनागमने चैव सभावसतिरागमः ॥ ३१ ॥

भोजनं नृत्यलिप्सा च कौतुकं निद्रितेति च।
शेषवर्गं स्वराङ्काढ्यं भानुना शेषितं ततः ॥ ३२ ॥
भान्वादिषु क्रमात्पञ्चयुग्मनेत्राग्निसायकाः।
रामरामाब्धिवेदाश्च क्षेप्यास्तष्टास्त्रिभिस्ततः ॥ ३३ ॥
एकादिशेषे खेटानामवस्था त्रिविधा भवेत्।
दृष्टिश्चेष्टा विचेष्टा च कथिता पूर्वपण्डितैः ॥ ३४ ॥

जिस नक्षत्र पर जो ग्रह स्थित हो उस नक्षत्र की संख्या से उस ग्रह की संख्या को गुणा कर के राशि के जितने अंश पर ग्रह बैठा हो उस अंश की संख्या से भी उस गुणनफल को गुणा करे। फिर जन्म नक्षत्र की संख्या, इष्ट काल के गत घटी की संख्या और जन्मलग्न की संख्या इन तीनों के योग को उस गुणनफल जोड़ के १२ का भाग देने पर एक आदि शेष बचे तो क्रमसे १ शयन, २ उपवेशन, ३ नेत्रपाणि, ४ प्रकाशन, ५ गमन, ६ आगमन, ७ सभावसति, ८ आगम, ९ भोजन, १० नृत्यलिप्सा, ११ कौतुक और १२ निद्रा ये बारह ग्रहों की अवस्थायें होती हैं।

फिर शेष का वर्ग कर के (शेष को शेष से गुण के) प्रसिद्धनाम के *स्वराङ्क को जोड़ के १२ का भाग देना जो शेष बचे उसमें सूर्यके लिये ५, चन्द्रमा और मङ्गल के लिये २, बुध के लिये ३, बृहस्पति के लिये ५, शुक्र और शनि के लिये ३ एवं राहु और केतु के लिये ४ जोड़ के ३ से भाग देने पर १ शेष बचे तो दृष्टि, २ शेष बचे तो चेष्टा और ३ शेष बचे तो विचेष्टा नाम की विशेष अवस्था भी होती है। ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ ३०-३४ ॥

उदाहरण—

रेवती नक्षत्र पर सूर्य है तो नक्षत्रसंख्या २७ को ग्रह की संख्या १ से और सूर्याधिष्ठित अंश की संख्या २१ से गुणा कर दिया तो गुणनफल=२७ × १ × २१= ५६७ हुआ इसमें जन्मनक्षत्र अनुराधा की संख्या १७, इष्ट काल के गत घटी की संख्या १३ और जन्मलग्न की संख्या ३ के योग (१७ + १३ + ३ = ३३) को जोड़ के योगफल = ५६७ + ३३ = ६०० में १२ से भाग दिया तो १२ शेष बचे। इसलिये सूर्य की निद्रा अवस्था हुई। फिर शेष १२ का वर्ग १२ × १२ = १४४ बना के इसमें प्रसिद्धनाम गोविन्दप्रसाद के आद्यक्षर स्वर (ओ) के अङ्क ५ को जोड़ के १४४ + ५ = १४९ बारह का भाग दिया तो ५ शेष हुए। फिर इस शेष (५) में सूर्य के क्षेपक ५ को जोड़ के (५ + ५ = १०) तीन का भाग दिया तो १ शेष बचा। इसलिये सूर्य की निद्रा अवस्था के अन्तर्गत दृष्टि नाम की अवस्था हुई। इसी प्रकार चन्द्रमा इत्यादि की भी अवस्था बनानी चाहिये।

* अ, इ, उ, ए, ओ इन पाचों स्वरों के क्रम से १, २, ३, ४, ५ स्वराङ्क होते हैं।

अन्यप्रकार से ग्रहों की अवस्था का ज्ञान—

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः ।
विकलश्च खलः कोपी नवधा खेचरो भवेत् ॥ ३५ ॥
उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वर्क्षेऽधिमित्रभे ।
मुदितः मित्रभे शान्तः समभे दीन उच्यते ॥ ३६ ॥
शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः ।
खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ॥ ३७ ॥

दीप्त, स्वस्थ, प्रमुदित, शान्त, दीन, अतिदुःखित, विकल, खल, और कोपी ये नव प्रकार के ग्रह होते हैं। अपने उच्च में स्थित ग्रह दीप्त, अपनी राशि में स्वस्थ, अधिमित्र की राशि में मुदित, मित्र की राशि में शान्त, सम की राशि में दीन, शत्रु की राशि में अति दुःखित, पापग्रह से युत रहने पर विकल, पाप ग्रह की राशि में रहने पर खल और सूर्य के साथ रहने से कोपी ग्रह होता है ।। ३५–३७ ।।

पञ्चधा मैत्री (सारावली से)—

व्ययाम्बुधनखायेषु तृतीये सुहृदः स्थिताः ।
तत्कालरिपवः षष्ठसप्ताष्टैकत्रिकोणगाः ॥ ३८ ॥
हितसमरिपुसंज्ञा ये निसर्गान्निरुक्ता
हिततमहितमध्यास्तेपि तत्कालखेटाः ।
रिपुसमसुहृदाख्याः सूतिकाले ग्रहेन्द्रा
अधिरिपुरिपुमध्याः शत्रुतश्चिन्तनीयाः ॥ ३९ ॥

तत्काल में १२।४।२।१०।११।३ इन स्थानों में रहने वाले ग्रह आपस में मित्र होते हैं। और ६।७।८।१।९।५ इन स्थानों में बैठा हुआ ग्रह शत्रु होता है। जो ग्रह स्वभाव से मित्र, सम अथवा शत्रु हैं वे ही यदि तत्काल में मित्र हों तो क्रम से तत्काल में अधिमित्र, मित्र और सम होते हैं। अर्थात् स्वाभाविक मित्र ग्रह तत्काल में भी मित्र हो तो तत्काल में अधिमित्र, स्वाभाविक सम ग्रह यदि तत्काल में मित्र हो तो मित्र एवं स्वाभाविक शत्रु ग्रह यदि तत्काल में मित्र हो तो तात्कालिक सम कहा जाता है। एवं जो ग्रह स्वभाव से शत्रु सम या मित्र हैं वे ही यदि तत्काल में शत्रु हो जायँ तो क्रम से उन्हें अधिशत्रु, शत्रु और सम समझना चाहिये ।। ३८–३९ ।।

नैसर्गिकमैत्री—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
मित्र	चं. मं बृ.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
सम	बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. चं.	श.	मं. बृ.	बृ.
शत्रु	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं	सू. चं. मं.

२ पृष्ठ पर लिखित जन्म कुण्डली के आधार पर तात्कालिक ग्रहमैत्री चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
तात्कालिक मित्र	बु. शु. श.	बु. बृ. शु. श.	बु. शु. श.	सू. चं. मं.	चं.	सू. चं. मं.	सू. चं. मं
तात्कालिक शत्रु	चं. बृ. मं.	सू. मं.	चं. बृ. सू.	बृ. शु. श.	सू. मं. बु. शु. श.	बु. बृ. श.	बु. बृ. शु.

पञ्चधा ग्रहमैत्रीचक्र—

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
अधिमित्र	०	बु.	०	सू.	चं.	०	०
मित्र	बु.	बृ. शु. श.	शु. श.	मं.	०	मं.	०
सम	चं. मं. बृ. शु. श.	सू.	सू. चं. बु. बृ.	चं. शु.	सू. मं.	सू. चं. बु. शु.	सू. चं. मं. बु. शु.
शत्रु	०	मं.	०	बृ. श.	श.	बृ.	बृ.
अधिशत्रु	०	०	०	०	बु. शु.	०	०

दशवर्गी—

लग्नं होराद्रेक्कसप्ताङ्ककाष्ठाभास्वान्भूपत्रिंशदभ्राङ्गभागाः ।
दिग्वर्गाख्याः प्रोक्तरीत्या प्रसाध्या होराविज्ञैः प्रस्फुटं सत्फलार्थम् ४०

लग्न, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, त्रिंशांश, और षष्ट्यंश ये दशवर्ग कहे जाते हैं। इनको आगे लिखी रीति से स्पष्ट करना चाहिये ॥ ४० ॥

राशिस्वामी—

कुजास्फुजिज्ज्ञेन्दुसूर्यज्ञशुक्रारेज्यसौरिणः ।
शनीज्यौ क्रमशोंशानां मेषादीनां च स्वामिनः ॥ ४१ ॥

मङ्गल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मङ्गल, गुरु, शनि, शनि और गुरु ये ग्रह क्रम से मेषादि १२ राशियों के स्वामी होते हैं। और मेषादि राशियों के अंशों के भी स्वामी होते हैं ॥ ४१ ॥

होरे रवीन्द्वोरसमे समे स्तः शशिसूर्ययोः ।
द्रेष्काणेशाः स्वपञ्चाङ्कभेशाः स्युः क्रमशः स्फुटाः ॥ ४२ ॥

विषम राशियों (१।३।५।७।९।११) में पहले १५ अंश तक सूर्यकी फिर १५ अंश चन्द्रमा की एवं सम (२।४।६।८।१०।१२) राशियों में पहले १५ अंश तक चन्द्रमा की फिर १५ अंश सूर्य की होरा होती है।

किसी भी राशि में पहले द्रेष्काण (१० अंश तक) का स्वामी उसी का स्वामी दूसरे द्रेष्काण (११ अंश से २० अंश तक) का स्वामी उससे पञ्चमेश और तीसरे द्रेष्काण (२१ अंश से ३० अंश तक) का स्वामी उससे नवमेश होता है ॥ ४२ ॥

सप्तमांश

लग्नादिसप्तमांशेशास्त्वोजे राशौ यथाक्रमम् ।
युग्मे लग्ने स्वरांशानामधिपाः सप्तमादयः ॥ ४३ ॥

विषय संख्याक (१।३।५।७।९।११) राशियों में उसी राशि से, सम संख्याक (२।४।६।८।१०।१२) राशियों में उससे सप्तम राशि से सप्तमांश को गणना होती है ॥ ४३ ॥

नवमांश

मेषादिषु क्रमान्मेषनक्रतौलिकुलीरतः ।
नवमांशा बुधैर्ज्ञेया होराशास्त्रविशारदैः ॥ ४४ ॥

मेषादि राशियों में क्रमसे मेष, मकर, तुला और कर्क इन राशियों से (३ अंश २० कला का) एकएक नवमांश होता है ऐसा होराशास्त्र के जानकारों ने कहा है। मेरा दूसरा पद्य—

चरे स्वस्मात्स्थिरे स्वाङ्काद् द्वन्द्वे तत्पञ्चमादितः ।
नवमांशाधिपतयो ज्ञेया जातकविद्वरैः ॥ इति ॥ ४४ ॥

दशमांश-द्वादशांश—

लग्नादिदशमांशेशास्त्वोजे युग्मे शुभादिकाः ।
द्वादशांशाधिपतयस्तत्तद्राशिवशानुगाः ॥ ४५ ॥

विषमराशियों में उसी राशि से और समराशियों में उसके नवमराशि

से दशमांश की गणना होती है। प्रत्येक राशि में उसी राशि से द्वादशांश की गणना होती है ॥ ४५ ॥

राशिस्वामी-होरा-द्रेष्काण-सप्तमांश-नवमांश बोधक चक्र—

०	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
स्वामी	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	राशिस्वामी
होरा	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	१५ अंश
	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	१५ अंश
द्रेष्काण	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	१० अंश
	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी	मे.	वृ.	मि	क.	२० अंश
	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	३० अंश
सप्तमांश	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	४।१७।८
	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि	म.	सिं	मी.	तु.	८।३४।१७
	मि	म.	सिं.	मी.	तु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	१२।५१।२५
	क.	कुं.	क	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं	मी.	तु.	वृ.	ध.	१७।८।३४
	सिं.	मी	पु.	वृ.	ध.	क.	कुं.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	२१।२५।४२
	क.	से.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	तु..	वृ.	थ.	क.	कुं.	२५।४२।५१
	तु.	वृ.	ध.	क.	कु.	क.	मे.	वृ.	मि.	म.	सिं.	मी.	३०।०।०
नवमांश	मे.	म.	तु,	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म,	तु.	क.	३।२०
	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं	६।४०
	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी	ध.	क.	१०।०
	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	१३।२०
	सिं	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	१६।४०
	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	२०।०
	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	२३।२०
	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं	वृ.	कुं.	२६।४०
	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	३०।०

दशमांश-द्वादशांश चक्र—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंश । कला
दशमांश	मे.	म.	मि.	मी.	सिं.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	३।०
	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	वृ.	सिं.	म.	तु.	मी.	ध.	६।०
	मि.	मी.	सिं.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	९।०
	क.	मे.	क.	मि.	वृ.	सिं.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	१२।०
	सिं.	वृ.	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	१५।०
	क.	मि.	वृ.	सिं.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	१८।०
	तु.	क.	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि.	मी.	सिं.	वृ.	२१।०
	वृ.	सिं.	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	२४।०
	ध.	क.	कुं.	वृ.	मे.	म.	मि	मी.	सिं.	वृ.	तु.	क.	२७।०
	म.	तु.	मी.	ध.	वृ.	कुं.	क.	मे.	क.	मि.	वृ.	सिं.	३०।०
द्वादशांश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	२।३०
	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	५।०
	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	७।३०
	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	१०।०
	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	१२।३०
	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	१५।०
	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	१७।३०
	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	२०।०
	ध.	म,	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	२२।३०
	म.	कं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध	२५।०
	कुं.	मी.	मे.	वृ.	सि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	२७।३०
	मी.	मे.	वृ.	म.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	३०।०

षोडशांश—

मेषादिषु मेषसिंहचापेभ्यो गणयेद्बुधः ।
कास्वेशार्काः नृपांशेशा ओजे युग्मे क्रमोत्क्रमात् ॥ ४६ ॥

मेषादि राशियों में मेषसे आरम्भ करके नवमांश की नाँई (अर्थात् मेष में मेष से, वृष में सिंह से, मिथुन में धनु से फिर कर्क में मेषसे, सिंह में सिंहसे, कन्या में धनु से एवं आगे भी) षोडशांश की गणना होती है। (और विषमसंख्यक राशियों में क्रम से ब्रह्मा, गौरी, [1]महादेव और सूर्य तथा सम राशियों में उत्क्रम से उक्त देवता षोडशांश के स्वामी होते हैं) ॥४६॥

षोडशांशचक्र—

विषमराशावीशाः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं,	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंशाः	समराशावीशाः
ब्रह्मा	मे.	सिं.	ध,	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	१।५२।३०	सूर्य
गौरी	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	३।४५।०	महादेव
महादेव	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	५।३७।३०	गौरी
सूर्य	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	७।३०।०	ब्रह्मा
ब्रह्मा	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे,	९।२२।३०	सूर्य
गौरी	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	११।१५।०	महादेव
महादेव	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	१३।७।३०	गौरी
सूर्य	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	१५।०।०	ब्रह्मा
ब्रह्मा	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	१६।५२।३०	सूर्य
गौरी	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ,	क.	१८।४५।०	महादेव
महादेव	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	२०।३७।३०	गौरी
सूर्य	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क,	वृ	२२।३०।०	ब्रह्मा
ब्रह्मा	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं.	ध.	मे.	सिं,	ध.	२४।२२।३०	सूर्य
गौरी	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	वृ.	क.	म.	२६।१५।०	महादेव
महादेव	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	मि.	तु.	कुं.	२८।७।३०	गौरी
सूर्य	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	क.	वृ.	मी.	३०।०।०	ब्रह्मा

१. प्राचीन अनेक ग्रन्थों में गौरी के स्थान पर विष्णु का उल्लेख मिलता है ।

त्रिंशांश—

कुजयमजीवज्ञसिताः पञ्चेन्द्रियवसुमुनीन्द्रियांशानाम् ।
विषमेषु समर्क्षेषूत्क्रमेण त्रिंशांशपाः कल्प्याः ॥ ४७ ॥

विषम राशियों (१।३।५।७।९।११) में क्रमसे ५।५।८।७।५ अंशों के भौम, शनि, बृहस्पति, बुध और शुक्र ये पाँच ग्रह स्वामी होते हैं । एवं सम राशियों (२।४।६।८।१०।१२) में विपरीत अर्थात् ५।७।८।५।५ अंशों के शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनैश्चर और मङ्गल ये त्रिशांश स्वामी होते हैं ॥ ४७ ॥

त्रिंशांशबोधकचक्र—

मे० मि० सिं० तु० ध० कुं	वृष० कर्क० कन्या० वृ० मक० मी०
५ मङ्गल	५ शुक्र
५ शनैश्चर	७ बुध
८ बृहस्पति	८ बृहस्पति
७ बुध	५ शनैश्चर
५ शुक्र	५ मङ्गल

षष्ठ्यंश—

षष्ठ्यंशकानामधिपास्त्वयुग्मे घोरांशकाद्याः सुरदेवभागाः ।
यदीन्दुरेखादिशुभाशुभांशाः क्रमेण युग्मे तु यथा विलोमात् ॥४८॥

३०।३० कलाका एक एक षष्ठ्यंश होता है। प्रत्येक राशि में उसी राशि से प्रारम्भ होता है और उनके घोरांशक इत्यादि क्रम से विषम राशियों तथा इन्दुरेखादि उत्क्रम से सम राशियों में स्वामी होते हैं। जो चक्र से स्पष्ट है ॥ ४८ ॥

पारिजातादिसंज्ञा—

ऐक्यं द्वित्र्यादिवर्गाणां क्रमाज्ज्ञेयं विचक्षणैः ।
पारिजातमुत्तमं गोपुरं सिंहासनं तथा ॥ ४९ ॥
पारावतांशकं देवलोक च ब्रह्मलोककम् ।
ऐरावतं तु नवकं वैशेषिकमतः परम् ॥ ५० ॥

जो ग्रह अपने दो वर्गमें स्थित हो तो पारिजातस्थ, ३ वर्ग में हो तो उत्तमस्थ, चार वर्ग में हो तो गोपुरस्थ, पाँच आत्मवर्ग में हो तो सिंहासनस्थ, छ वर्ग में हो तो पारावतांशकस्थ, सात वर्ग में हो तो देवलोकस्थ, आठ वर्ग में हो तो ब्रह्मलोकस्थ, नववर्ग में बैठा हो तो ऐरावतांशकस्थ तथा दश वर्ग में व्यवस्थित हो तो वैशेषिकांशकस्थ कहा जाता है ॥ ४६-५० ॥

विंशोत्तरीया पञ्चधा दशा—

दशा चान्तर्दशा चैव विदशोपदशा तथा ।
प्राणाख्या च फलं तासां वदेच्छास्त्रानुसारतः ॥ ५१ ॥

१ महादशा, २ अन्तर दशा, ३ विदशा (प्रत्यन्तर दशा), ४ उपदशा, (सूक्ष्मदशा) और ५ प्राणदशा ये ५ प्रकार की दशायें होती हैं। इनके फलों का शास्त्र के अनुसार आदेश करे ॥ ५१ ॥

महादशाज्ञान—

स्युः कृत्तिकादिनवकत्रिकभे रवीन्दु-
भौमाऽगुजीवशनिविच्छिखिभार्गवाणाम् ।
षड्दिङ्नगेभविधु-भूप-नवेन्दु-शैल-
भू-भूधरा नखमिताः क्रमतो दशाब्दाः ॥ ५२ ॥

कृत्तिका नक्षत्र से आरम्भ कर के नव नव नक्षत्र ३ आवृत्ति में गिनने पर क्रम से सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र इनकी दशा के ६।१०।७।१८।१६।१६।१७।७।२० वर्ष होते हैं ॥ ५२ ॥

विंशोत्तरीया दशा—

नक्षत्र	कृत्ति० उ. फा उ. षा	रोहि० हस्त श्रवण	मृग० चित्रा धनिष्ठा	आर्द्रा० स्वाती शत०	पुन० विशा० पू. भा.	पुष्य अनु० उ. भा	आश्ले. ज्येष्ठा रेवती	मघा मूल अश्वि	पू. फा पू. षा भरणी
दशेश	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

(क) दशाभुक्तभोग्यानयन—

भयातमानेन हता दशाब्दा
भभोगमानेन हृताः फलं स्यात् ।
समादिकं भुक्तमनेन हीना
दशामितिर्भोग्यमितिः स्फुटा स्यात् ॥
ततः प्रभृत्येव दशाफलानि
प्रकल्पनीयानि बुधैर्ग्रहाणाम् ॥ ५३ ॥

दशा वर्ष को पलात्मक भयात के गुणा कर के पलात्मकभभोग से भाग देने पर लब्धि वर्ष होता है। फिर वर्ष शेष को १२ से गुणा कर के उसी भभोग से भाग देने पर लब्धि मास आता है। पुनः मास शेष को ३० से गुण के उसी हर से भाग देने पर भागफल गतदिन आता है। एवं दिन शेष को ६० से गुणा कर के उसी भाजक से भजन करने पर लब्धि गतघटी होती है और घटी शेष को ६० से गुण के उसी भाजक से भाग देने पर लब्धि पला होती है। एवं ५ स्थानों तक लब्धि लेकर आगे प्रयोजनाभाव से शेष को परित्याग कर देना चाहिये। अत एव किसी ने लिखा भी है—

शेषादर्कगुणा मासाः शेषस्त्रिशद्गुणा दिवा ।
शेषात्षष्टिगुणा नाड्यः शेषात्षष्टिगुणाः पलाः ॥ इति ।

इस भांति जन्मकालीन दशा का सौरात्मक भुक्त वर्ष, मास, दिन, घटी, पल होता है। इस को दशा वर्ष में घटा देने से शेष दशा का भोग्य वर्षादि हो जाता है। यहीं से दशा की प्रवृत्ति होती है ॥ ५३ ॥

(ख) दशा का भोग्यानयन—

भयातघट्यूनभभोगमानं
स्वैः स्वैर्दशाब्दैर्गुणितं विभक्तम् ।
भभोगमानेन फलं भवेद्य-
त्तदेव भोग्याः शरदो दशायाः ॥ ५४ ॥

भयात को भभोग में घटा कर जो शेष बचे उसको पलात्मक बना के दशा वर्ष से गुणा कर के पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्धि दशा का भोग्य वर्षादिक हो जाता है ॥ ५४ ॥

दशा का भुक्तवर्षानयन—

पलात्मक भयात २७५५

शनिदशावर्ष = १९

२४७९५

२७५५

३४३४) ५२३४५ (१५।२।२७।३२।११

३४३४ वर्षादि दशा भुक्त हुआ

१८००५

१७१७०

८३५

१२

३४३४) १००२०

६८६८

३१५२

३०

३४३४) ९४५६०

६८६८

२५८८०

२४०३८

१८४२

६०

३४३४) ११०५२०

१०३०२

७५००

६८६८

६२२

६०

३४३४) ३७९२०

३४३४

३५८०

३४३४

१४६ = शेष

'अर्धाल्पे त्याज्यं' इस नियम के अनुसार शेष १४६ को छोड़ दिया तो लब्धि १५।२।२७।३२।११ दशा का भुक्तवर्षादि हुआ।

दशा का भोग्यवर्षानयन—

पलात्मक भभोग ६७९

शनिदशावर्ष = १९

६१११

६७९

३४३४) १२९०१ (३।९।२।२७।४९

१०३०२ वर्षादिदशाभोग्य

२५९९ काल हो गया

१२

३४३४) ३११८८

३०९०६

२८२

३०

३४३४) ८४५०

६८६८

१५९२

६०

३४३४) ९५५२०

६८६८

२६८४०

२४०३८

२८०२

६०

३४३४) १६८१२०

१३७३६

३०७६०

२७४७२

३२८८ = शेष

अर्धाधिक होने के कारण ८ की जगह शेष ९ कल्पना कर लिया तो वर्षादिक दशा का ३।९।२।२७।४९ भोग्य काल हुआ।

इस प्रकार दशाके भुक्त और भोग्य दोनों का साथ साथ गणित करने से कभी अशुद्धि नहीं हो सकती।

महादशा लिखने का क्रम—

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चन्द्र	दशेश
३	१७	७	२०	६	१०	वर्ष
९	०	०	०	०	०	मास
२	०	०	०	०	०	दिन
२७	०	०	०	०	०	घटी
४९	०	०	०	०	०	पल
१९९०	१९९४	२०११	२०१८	२०३८	२०४४	संवत्
११	८	८	८	८	८	राशि
२०	२३	२३	२३	२३	२३	अंश
५८	२५	२५	२५	२५	२५	कला
०	४९	४९	४९	४९	४९	विकला

(ग) स्पष्टचन्द्रमा ही पर से दशाका भुक्त भोग्यानयन—

स्फुटेन्दोः कलाद्यं विभक्तं खखेभैः ८००
फलं भानि दास्रादिकानि स्युरेवम् ।
दशाब्दैर्हतं शेषकं खाभ्रनागै ८००
र्हृतं स्यात्समाद्यं दशाभुक्तमानम् ॥ ५५ ॥
ततस्तद्विशोध्यं दशावर्षमध्ये-
ऽविशिष्टं भवेद्भोग्यमानं दशायाः ।
फलं पूर्ववत्तस्य कल्प्यं सुसद्भि-
र्महद्भिस्तथा काशिकायां वसद्भिः ॥ ५६ ॥

राश्यादि स्पष्ट चन्द्रमा की कला बना के ८०० का भाग देने पर लब्धि गत नक्षत्रकी संख्या होती है। अब वर्तमान नक्षत्रके अनुसार जो दशावर्ष आवे उससे शेष कला को गुणा करके ८०० का भाग देने पर लब्ध वर्षादि दशा का भुक्तमान होता है। उसको दशा वर्ष में घटा देने से शेष दशाका भोग्यवर्षादि होता है॥ ५५-५६ ॥

(घ) प्रकारान्तर से—

भागपूर्वः शशी त्र्याहतः खाब्धि ४० हृत्तत्फलं यातनक्षत्रसंख्या भवेत् ।
शेषकं स्वैर्दशाब्दैर्गुणं भाजितं शून्यवेदै ४० र्दशाभुक्तमानं भवेत् ॥
तत्परं पूर्ववद्भोग्यमानं तथा कल्पनीयं फलं जातकज्ञैः सदा ॥५७॥

अंशादिक स्पष्ट चन्द्रमा को ३ से गुणा कर के ४० का भाग देने पर लब्धि नक्षत्र की संख्या होती है। शेष अंशादि को दशावर्ष से गुणा करके ४० का भाग देने से लब्धि दशा का भुक्तवर्षादि होता है। उसके बाद पूर्वविधि से भोग्य की कल्पना करे ॥ ५७ ॥

(ङ) अंशादि नक्षत्र शेष पर से दशा का भोग्यानयन—

भागादिकं वा किल यद्भशेषं
त्रिघ्नैर्दशाब्दैर्गुणितं विभक्तम् ।
शून्याब्धि ४० भिस्तत्खलु भोग्यमानं
विना प्रयासेन भवेद्दशायाः ॥ ५८ ॥

अंशादि नक्षत्र शेष (१) (भोग्य) को त्रिगुणित दशावर्ष से गुणा करके ४० का भाग देने से लब्धि दशा का भोग्यवर्षादि होता है ॥ ५८ ॥

(२) अन्तरदशासाधन का सुलभप्रकार

दशादशाघातभवस्य योङ्क
आद्यः स धीरैस्त्रिगुणो विधेयः ।
तावन्मिताः स्युर्दिवसाश्च मासाः
शेषाङ्कतुल्याः सुधियाऽवगम्याः ॥ ५९ ॥

जिस ग्रह की महादशा में अन्तर दशा निकालनी हो उन दोनों ग्रहों के महादशा वर्षों का परस्पर गुणा करने से जो अङ्क (संख्या) हो उसके आद्यङ्क को ३ से गुणा कर देने पर दिन हो जाता है। और शेषाङ्क के समान मास होता है (मास संख्या १२ से अधिक हो तो १२ का भाग देकर वर्ष बना लेना चाहिये) ॥ ५९ ॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में शनि का अन्तर लाना है तो बुध के दशावर्ष १७ से शनि के दशावर्ष १९ को गुणा किया तो १७ × १९=३२३ हुए इन में आद्यङ्क ३ को ३ से गुणा किया तो ९ दिन हुए। और शेष ३२ मास बचे। अर्थात् बुध की महादशा में शनि का अन्तर २ वर्ष ८ मास ९ दिन का हुआ। एवं सर्वत्र अन्तर-दशा का साधन बड़ी सुगमता से हो जाता है।

---

१. स्पष्ट चन्द्रकला में ८०० से भाग देने पर जो लब्धि आवे वह गत नक्षत्र की संख्या होती है और शेष वर्तमान नक्षत्र की भुक्त कला होती है। भुक्तकला को ८०० में घटा के ६० का भाग देने से नक्षत्र का भोग्यांश (अंश शेष) होता है।

सूर्य की महादशा में अन्तर्दशा।										चन्द्रमा की महादशा में अन्तर्दशा।										
सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	वर्ष
३	६	४	१०	९	११	१६	४	०	०	१०	७	६	४	७	५	७	८	६	१	मास
१८	०	६	२४	१८	१२	३	६	०	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

मंगल की महादशा में अन्तर्दशा।										राहु की महादशा में अन्तर्दशा।										
मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.	दशेश
०	१	०	१	०	०	१	०	०	०	२	२	२	२	१	३	०	१	१	०	वर्ष
४	०	११	१	११	४	२	४	७	०	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	१	मास
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	२१	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	२४	दिन

बृहस्पतिकी महादशामें अन्तर्दशा।										शनि की महादशा में अन्तर्दशा।										
बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.	दशेश
२	२	२	०	२	०	१	०	२	०	३	२	१	३	०	१	१	२	२	०	वर्ष
१	६	३	११	८	९	४	११	४	१	०	८	१	२	११	७	१	१०	६	१	मास
१८	१२	६	६	०	१८	०	०	२४	१८	३	९	९	०	१२	०	१	६	१२	२७	दिन

बुध की महादशा में अन्तर्दशा।										केतु की महादशा में अन्तर्दशा।										
बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.	दशेश
२	०	२	०	१	०	२	२	२	०	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	वर्ष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	१	४	२	४	७	४	०	११	१	११	०	मास
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२१	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	२१	दिन

शुक्र की महादशा में अन्तर्दशा।

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.	दशेश
३	१	१	१	३	२	३	२	१	०	वर्ष
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	२	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

बुध की महादशा में सबों की अन्तर्दशा।

बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	दशेश
२	०	२	०	१	०	२	२	२	वर्ष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मास
२७	२७	७	६	०	२७	१८	६	९	दिन
१९९४	१९९७	१९९८	२०००	२००१	२००३	२००४	२००६	२००९	२०११
८	१	१	११	९	२	२	९	०	८
२३	२०	१७	१७	२३	२३	२०	८	१४	२३

अन्तरादिसाधन का दूसरा प्रकार—

स्वैः स्वैर्दशाब्दैर्गुणितं दशादिवर्षादिकं विंशतियुक्शतेन १२० ।
भजेच्च लब्धं हि निजान्तरान्तर्दशादिमानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ६० ॥

जिस ग्रह की दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा आदि में अन्तरदशा प्रत्यन्तरदशा, सूक्ष्मदशा आदि का साधन करना हो, उस ग्रह के दशावर्ष से अन्य ग्रह के दशावर्ष, अन्तरदशा मास, प्रत्यन्तरदशा दिन इत्यादि को गुणा करके १२० का भाग देने से अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा इत्यादि का वर्ष, मास, दिनादिक होता है ॥ ६० ॥

अवरोहक्रम से ध्रुवकवश अन्तरादि का साधन (ग्रन्थान्तर से)—

रामैर्हताश्चार्कमुखग्रहाणां दशाब्दकास्ते दिवसा भवन्ति ।
दशासमानां खलु षष्ठभागः शुक्रस्य भुक्तिः सकलग्रहेषु ॥६१॥
दशेश्वरदिनैर्हीना शुक्रभुक्तिर्भवेच्छनेः ।
सैव हीना दशानाथदिनैश्चागोः स्मृता हि सा ॥ ६२ ॥
रहिता चैव सा ज्ञेया चन्द्रजस्य तु तैर्दिनैः ।
एवं हीना च सा ज्ञेया दशानाथदिनैर्गुरोः ॥ ६३ ॥
अगोस्त्रिभागं रविभुक्तिमाहुः शुक्रस्य चार्धं हिमगोर्भवेत्सा ।
युता दशानाथदिनै रवेस्तु भुक्तिर्भवेच्चैव कुजस्य केतोः ॥
एवं समस्तग्रहभुक्तयस्तु कार्या दिनेशादिखगेश्वराणाम् ॥ ६४ ॥

सूर्यादिक ग्रहों के दशावर्ष को ३ से गुणाकर देने से ध्रुवक हो जाता है। प्रत्येक ग्रह के दशावर्ष के छठे भाग के बराबर शुक्र की अन्तरदशा होती है। शुक्र की अन्तरदशामें ध्रुवक घटानेसे शनि का अन्तर, शनिके अन्तर में ध्रुवक घटाने से राहुका अन्तर, राहु के अन्तर में ध्रुवक घटाने से बुध

का अन्तर, बुधके अन्तर में ध्रुवक घटाने से बृहस्पति का अन्तर होता है। राहु की अन्तरदशा की तिहाई के तुल्य सूर्यका अन्तर, शुक्रान्तर के आधे के बराबर चन्द्रमा का अन्तर और सूर्य के अन्तर में ध्रुवक जोड़ देने से मङ्गल और केतु का अन्तर होता है ॥ ६१-६४ ॥

आरोहक्रमसे अन्तरादिका साधन—

निघ्नं त्रिभिः खलु खगस्य दशाप्रमाणं स्पष्टं भवेद्ध्रुवकसंज्ञकमन्तरार्थम् ।
दिग्भी रसैश्च गुणितं क्रमशो भवेतां स्पष्टेऽन्तरे हिमरुचो दिवसेश्वरस्य ६५
द्वयोर्युताचिन्द्रगुरोः प्रमाणं ततो भवेयुध्रुवकस्य योगात् ।
वुधाऽगुसौर्य्याऽऽस्फुजितां क्रमेणान्तराब्दमानानि परिस्फुटानि ॥६६॥
सूर्यान्तरे तद्ध्रुवकस्य योगाद्भौमस्य केतोश्च परिस्फुटत्वम् ।
ज्ञेयं बुधैः सद्धिषणाधनाढ्यैः सज्ज्यौतिपालोडनसुप्रवीणैः ॥ ६७ ॥

जिसकी महादशा में ग्रहोंका अन्तर साधन करता हो उसके दशावर्ष को ३ से गुणा करनेसे उसका ध्रुवक हो जाता है। उस ध्रुवक को क्रमसे १० और ६ से गुणन करने से चन्द्रमा और सूर्यका अन्तर होता है। इन दोनों (सूर्य और चन्द्रमा) के अन्तरदशाओं के योगके बराबर बृहस्पतिका अन्तर होता है। बृहस्पति के अन्तर में बार २ ध्रुवक जोड़ने से क्रमसे बुध, राहु, शनि और शुक्र का अन्तर हो जाता है। सूर्य के अन्तर में ध्रुवांक जोड़ देने से मङ्गल और केतु का अन्तर होता है ॥ ६५-६७ ॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में ९ ग्रहों का अन्तर लाना है तो बुध के दशावर्ष को ३ से गुणा कर दिया तो १७ × ३=५१ दिन अर्थात् १ महीना २१ दिन बुधका ध्रुवक हुआ। इस (१।२१) को क्रम से १० और ६ से गुण दिया जाय तो १७ महिना (१ वर्ष ५ मास) चन्द्रमा का और १० महीना ६ दिन सूर्य का अन्तर हुआ। दोनों को जोड़ दिया तो २ वर्ष ३ महीना ६ दिन बृहस्पति का अन्तर हुआ। इसमें ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो २ वर्ष ४ महीना २७ दिन बुध का अन्तर हुआ, इसमें ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो २ वर्ष ६ महीना १८ दिन राहु का अन्तर हुआ। फिर इसमें ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो २ वर्ष ८ मास ९ दिन शनि का अन्तर हुआ। फिर इसमें १।२१ ध्रुवक जोड़ दिया तो २ वर्ष १० महीना शुक्र का अन्तर हुआ। पुनः सूर्य के अन्तर (१० म० ६ दि०) में ध्रुवक १।२१ जोड़ दिया तो ११ महीना २७ दिन केतु और मंगल का अन्तर हुआ। इन अन्तरों को यथास्थान रख दिया तो पूर्व लिखे चक्र के तुल्य बुध में ९ ग्रहों के अन्तर हो गये। (४९ पृष्ठ देखिये)

प्रत्यन्तर का ध्रुवकज्ञान—

महादशाधीश्वरवर्षघातः खवेद ४० भक्तो दिवसादिकः स्यात् ।

ध्रुवो नु प्रत्यन्तरके प्रसाध्यं पूर्वप्रकारेण दशाप्रमाणम् ॥ ६८ ॥

दोनों ग्रहों के महादशा वर्षों को आपस में गुणन कर के ४० का भाग देने से लब्धि दिनादि प्रत्यन्तर साधन करने के लिये ध्रुवक होता है। इस ध्रुवक पर से पूर्व विधि के अनुसार प्रत्यन्तरदशा का साधन करना चाहिये ॥ ६८ ॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में शनि की अन्तर दशा में सब ग्रहों का प्रत्यन्तर साधन करना है तो बुध और शनि के दशावर्षों का गुणा कर के ४० का भाग दिया तो $\frac{१७ \times १९}{४०}$ = ८ दिन ४ घटी ३० पल ध्रुवक हुआ। इस पर से पूर्ववत् प्रत्यन्तर दशा बन जायगी।

सूक्ष्मादि का ध्रुवनयन—

महाशादेर्नाथानां दशाब्दा गुणिता मिथः ।
खनागैः खनृपैर्भक्ता सूक्ष्मे प्राणे परिस्फुटौ ॥ ६९ ॥
ध्रुवौ भवेतां घट्यादि-पलाद्यौ सुधिया ततः ।
प्रसाध्यं पूर्ववत्सर्वं प्रत्यन्तरदशादिकम् ॥ ७० ॥

दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशाके स्वामियों के महादशावर्षों का आपस में गुणा कर के ८० का भाग देने से उपदशा (सूक्ष्मदशा) आनयन के लिये घट्यादिक ध्रुवक होता हैं। और दशा, अन्तरदशा, प्रत्यन्तरदशा और सूक्ष्मदशा के स्वामियों के दशावर्षों का परस्पर गुणन कर के १६० का भाग देने से प्राणदशा का ध्रुवक होता है। उसके बाद पूर्वरीति (६५-६७श्लोकों) के अनुसार सूक्ष्मदशा और प्राणदशा का साधन करना चाहिये ॥६९-७०॥

उदाहरण—

बुध की महादशा में शनि की अन्तरदशा में गुरु की प्रत्यन्तर दशा में सब ग्रहों की सूक्ष्मदशा का ज्ञान करना है तो बुध की महादशा का वर्ष १७, शनि की महा दशा का वर्ष १९ और गुरु की महादशा का वर्ष १६ है। इनका आपस में गुणन फल निकाल के ८० का भाग दिया तो गुरु की प्रत्यन्तर दशा में सब ग्रहों की सूक्ष्मदशा साधन के लिये घट्यादि ध्रुवक = $\frac{१७ \times १९ \times १६}{८०}$

= ६४ घ० ३६ पल

= १ दि० ४ घ० ३६ प० हुआ

इस पर से पूर्व विधि के अनुसार प्रत्येक ग्रहों की सूक्ष्म दशा का ज्ञान करना चाहिये।

4 एवं प्राण दशानयनार्थं ध्रुवक का भी ज्ञान होता है।

सूर्य

सूर्यकी महादशामें सूर्यके अन्तर में सबों का प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	०
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	५४

सूर्यकी महादशा में चन्द्रमा के अन्तर में सबों का प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	१	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०	घटी

सूर्यकी महादशामें भौम के अन्तर में सबों का प्रत्यन्तर

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	१
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	३

सूर्यकी महादशा में राहु के अन्तर में सबों का प्रत्यन्तर

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	दशेश
१	१	१	१	०	१	०	०	०	०	मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	२	दिन
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	४२	घटी

सूर्यकी महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.
१	१	१	०	१	०	०	०	१	०
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	२
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	२४

सूर्यकी महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	धु.	दशेश
१	१	०	१	०	०	०	१	१	०	मास
२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	२	दिन
९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	५१	घटी

सूर्यकी महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	धु.
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	२
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	१८	२७	३३

सूर्यकी महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	२	०	मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	१	दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	३	घटी

सूर्यकी महादशा में शुक्र के अन्तर में सब ग्रहों का प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.	दशेश
२	०	१	०	१	१	१	१	०	०	मास
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्रमा

चन्द्र की महादशा में चद्रमा के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										चन्द्र की महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										
चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के	शु.	सू.	चं.	ध्रु.	दशेश
०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	१	०	०	०	मास
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	२	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	१	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	४५	घटी

चन्द्र की महादशा में राहुके अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										चन्द्र की महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										
रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.	दशेश
२	२	२	२	१	३	०	१	१	०	२	२	२	०	२	०	१	०	२	०	मास
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	४	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	४	दिन
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्र की महादशामें शनि के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										चन्द्र की महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	ध्रु.	दशेश
३	२	१	३	०	१	१	२	२	०	२	०	२	०	१	०	२	२	२	०	मास
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	४	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	४	दिन
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५	घटी

चन्द्र की महादशामें केतु अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										चन्द्र की महादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर										
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.	दशेश
०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	३	१	१	१	३	२	३	२	१	०	मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	१	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	५	दिन
१५	०	३०	३०	१५	३०	४५	१५	४५	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

चन्द्रमा की महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्र.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	मास
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	१	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	३०	घटी

मङ्गल

भौम महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	१	दिन
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	१३	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	पल

भौम महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	दशेश
१	१	१	१	०	२	०	१	०	०	मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	३	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	९	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल

भौम महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
१	१	१	०	१	०	०	०	१	०	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	२	दिन
४८	१२	२६	२३	०	४८	०	३६	२४	४८	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल

भौम महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	धु.	दशेश
२	१	०	२	०	१	०	१	१	०	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	दिन
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१९	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

भौम महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	धु.	दशेश
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२	दिन
३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	५८	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

भौम महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	१	दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	१३	घटी
३०	०	०	०	३०	५	०	३०	३०	३०	पल

भौम महादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.	दशेश
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	मास
१०	२१	५	२४	२३	२६	६	२९	२४	३	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	घटी

भौम महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	२१	२१	०	३	घटी

भौम महादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	धु.	दशेश
०	०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५	घटी

राहु

राहु महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	धु.
४	४	५	४	१	५	१	२	१	०
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	८
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	६

राहु महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
३	४	४	१	४	१	२	१	४	०	मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९	७	दिन
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	१२	घटी

राहु महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	धु.
५	४	१	५	१	२	१	५	४	०
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	८
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	३३

राहु महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	धु.	दशेश
४	१	५	१	२	१	४	४	४	०	मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	७	दिन
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	३९	घटी

राहु महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु
०	२	०	१	०	१	१	१	१	०
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	३
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	९

राहु महादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.	दशेश
६	१	३	२	५	४	५	५	२	०	मास
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	९	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

राहु महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	२
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	४२

राहु महादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	सू.	शु.	धु.	दशेश
१	१	२	२	२	२	१	३	०	०	मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	४	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०	घटी

राहु की महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.	दशेश
०	१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	३	दिन
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	९	घटी

गुरु

गुरुमहादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ध्रु.	दशेश
३	४	३	१	४	१	२	१	३	०	मास
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	६	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	२४	घटी

गुरुमहादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ध्रु.	दशेश
४	४	१	५	१	२	१	४	४	०	मास
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	७	दिन
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	३६	घटी

गुरुमहादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ध्रु.	दशेश
३	१	४	१	२	१	४	३	४	०	मास
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	६	६	दिन
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	४८	घटी

गुरुमहादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ध्रु.	दशेश
०	१	०	०	०	१	१	१	१	०	मास
१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	२	दिन
३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	४८	घटी

गुरुमहादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ध्रु.	दशेश
५	१	२	१	४	४	५	४	१	०	मास
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	८	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

गुरुमहादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ध्रु.	दशेश
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	२	दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	२४	घटी

गुरुमहादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ध्रु.	दशेश
१	०	२	२	२	२	०	२	०	०	मास
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

गुरुमहादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ध्रु.	दशेश
०	१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	२	दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	४८	घटी

गुरुमहादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ध्रु.	दशेश
४	३	४	४	१	४	१	२	१	०	मास
९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	७	दिन
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	१२	घटी

शनि

शनि महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	धु.
५	५	२	६	१	३	२	५	४	०
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	९
२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	१
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शनि महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	धु.	दशेश
४	१	५	१	२	१	४	४	५	०	मास
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	८	दिन
१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	४	घटी
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	पल

शनि महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु.
०	२	०	१	०	१	१	२	१	०
२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	३
१६	३०	५७	१५	१६	९१	१२	१०	३१	१९
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि महादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.	दशेश
६	१	३	२	५	५	६	५	२	०	मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	९	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल

शनि महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	२
६	३०	५७	१८	२६	९	५७	२७	०	५१

शनि महादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	धु.	दशेश
१	१	२	२	३	२	१	३	०	०	मास
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२०	४	दिन
३०	९५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५	घटी

शनि महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.
०	१	१	२	१	०	२	०	१	०
२३	२९	२२	३	२६	२३	६	१९	३	३
१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१९
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

शनि महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	दशेश
५	४	५	४	१	५	१	२	१	०	मास
३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२६	८	दिन
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	३३	घटी
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल

शनि महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
४	४	४	१	५	१	२	१	४	०	मास
१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	७	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	घटी

बुध

बुधमहादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	धु.
४	१	४	१	२	१	४	३	४	०
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	७
३९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	१३
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

बुधमहादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु.	दशेश
०	१	०	०	०	१	१	१	१	०	मास
२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	२	दिन
४६	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४	५८	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	पल

बुधमहादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.
५	१	२	१	५	४	५	४	१	०
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९	८
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०

बुधमहादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.	दशेश
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	२	दिन
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	३३	घटी

बुधमहादशा में चन्द्रके अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	धु.
१	०	२	२	२	२	०	२	०	०
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	४
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमहादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

मं.	रा.	बृ.	रा.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.	दशेश
०	१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	२	दिन
४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५	५८	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	पल

बुधमहादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों का प्रत्यन्तर

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.
४	४	४	४	१	५	१	२	१	०
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	७
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	३९

बुधमहादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
३	४	३	१	४	१	२	१	४	०	मास
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	६	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	घटी

बुधमहादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	धु.	दशेश
५	४	१	५	१	२	१	४	४	०	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	८	दिन
२५	१६	३१	३०	[illegible]	४५	३१	२१	१२	४	घटी
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

केतु

केतु महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										केतु महादशा में शुक्र के अन्तर ग्रहों के प्रत्यन्तर										
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु.	शु.	सू.	चं	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	५	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	३	दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४६	१३	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	घटी
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल

केतु महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										केतु महादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.	चं.	म.	रा.	बृ.	श	बु	के.	शु.	सू.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	१	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	३	३०	५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५	घटी

केतु महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										केतु महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के	शु.	सू.	च.	धु.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०	२	०	१	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२१	८	२४	७	१२	१	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	३	दिन
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	१३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	९	घटी
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पल

केतु महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										केतु महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर										
बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	म.	रा.	धु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	धु.	दशेश
१	१	१	०	१	०	०	०	१	०	२	१	०	२	१	१	०	१	१	०	मास
४	१३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	२	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२६	२३	३	दिन
१८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१९	घटी
४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	२०	०	०	०	३०	०	०	३०	पल

केतु महादशा में बुधके अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु.	फ.	शु.	सू.	चं	मं	रा.	बृ.	श.	धु.	दशेश
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०	मास
२०	२०	२९	१७	२६	२०	२३	१७	२६	२	दिन
३४	४६	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	५८	घटी
३०	३०	०	०	३०	३०	०	०	३०	३०	पल

शुक्र

शुक्र महादशा में शुक्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	धु.
६	२	३	२	६	५	६	५	२	०
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशा में सूर्य के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

सू.	च.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	धु.	दशेश
०	१	०	१	१	१	१	०	२	०	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

शुक्र महादशा में चन्द्र के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	धु.
१	१	३	२	३	२	१	३	१	०
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशा में भौम के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	धु.	दशेश
०	२	१	२	१	०	२	०	१	०	मास
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	३	दिन
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	घटी

शुक्र महादशा में राहु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	धु.
५	४	५	५	२	६	१	३	२	०
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशा में गुरु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बृ.	श.	बु.	क.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	धु.	दशेश
४	५	४	१	५	१	२	१	४	०	मास
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	८	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घटी

शुक्र महादशा में शनि के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	धु.
६	५	२	६	१	३	२	५	५	०
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	९
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र महादशा में बुध के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	धु.	दशेश
४	१	५	१	२	१	५	४	५	०	मास
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	८	दिन
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	घटी

शुक्र महादशा में केतु के अन्तर में ग्रहों के प्रत्यन्तर

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	धु.	दशेश
०	२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	३	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घटी

योगिनी दशानयन—

जन्मभं त्रियुतं तष्टमष्टभिः शेषतो दशा ।
मङ्गलाद्या अब्दवृद्ध्या सङ्कटाऽष्टौ समा मता ॥ ७१ ॥
आसामीशाः क्रमाच्चन्द्रभान्वीज्यकुजचन्द्रजाः ।
मन्दाऽऽस्फुजित्सैंहिकेया विज्ञेया होरिकोत्तमैः ॥ ७२ ॥

जन्म नक्षत्र की संख्या में ३ जोड़ के ८ का भाग देने से शेष मङ्गला आदि ८ दशायें होती हैं । और उनके क्रमसे चन्द्रमा, सूय, बृहस्पति, मङ्गल, बुध, शनि, शुक्र और राहु–केतु स्वामी होते हैं । स्फुटता के लिये चक्र देखिये ॥ ७१–७२ ॥

योगिनीदशा ज्ञान—

नक्षत्र	० आर्द्रा चित्रा श्रवण	० पुन. स्वाती घनिष्ठा	० पुष्य विशा शत्त	अश्वि. आश्ले अनु पूभा	भरणी मघा ज्येष्ठा उभा	कृत्तिका पू. फ. मूल रेवती	रोहिणी उ.फ. पू. षा ०	मृग. हस्त उ. षा ०
दशा	मङ्गला	पिङ्गला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	सङ्कटा
दशेश	चन्द्र	सूर्य	गुरु	भौम	बुध	शनि	शुक्र	रा. के.
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८

योगिन्यन्तरदशा ज्ञान—

दशा दशाहता कार्या शिवनेत्र३विभाजिता ।
लब्धं मासादिकं ज्ञेयं योगिन्यामन्तरं स्फुटम् ॥ ७३ ॥

महादशा वर्ष को अन्तरदशेश के वर्ष से गुणाकरके ३ का भाग देने से लब्धि मासादिक अन्तरदशा(१)होती है ॥ ७३ ॥

सिद्धा महादशा में सङ्कटा की अन्तरदशा निकालनी है तो सिद्धा के वर्ष ७ को सङ्कटा के वर्ष ८ से गुणा करके ३ से भाग दिया तो $\frac{७ \times ८}{३}$ = १८ मास २० दिन (अर्थात् १ वर्ष ६ महीना २०) सिद्धा में सङ्कटा का अन्तर (अथवा सङ्कटा में सिद्धा का अन्तर) हुवा ।

१ मङ्गला में अन्तर— २ पिङ्गला में अन्तर—

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	दशा
चं.	सू.	गु.	भौ.	बु.	श.	शु.	रा. के.	सू.	बृ.	भौ.	बु.	श.	शु.	रा. के.	चं.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
०	०	१	१	१	२	२	२	१	२	२	३	४	४	५	०	मास
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०	दिन

१. योगिनी दशा के भुक्त और भोग्य वर्षादि को भी ५३–५४ श्लोकों के अनुसार ही स्पष्ट कर लेना चाहिये ।

३ घान्या में अन्तर— ४ भ्रामरी में अन्तर—

घा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पि.	घा.	दशा
बृ.	भौ.	बु.	श.	शु.	रा. के.	चं.	सू.	भौ.	बु.	श.	शु.	रा. के.	चं.	सू.	बृ.	दशेश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष
३	४	५	६	७	८	१	२	५	६	८	९	१०	१	२	४	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०	दिन

५ भद्रिका में अन्तर— ६ उल्का में अन्तर—

भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	दशा
बु.	श.	शु.	रा. के.	चं.	सू.	बृ.	भौ.	श.	शु.	रा. के.	चं.	सू.	बृ.	भौ.	बु.	ददेश
०	०	१	१	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	वर्ष
८	११	०	१	१	३	५	६	०	२	४	२	४	६	८	१०	मास
१०	२०	२०	१०	२०	१०	०	२०	०	०	०	०	०	१	०	०	दिन

७ सिद्धा में अन्तर— ८ सङ्कटा में अन्तर—

सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	दशा
शु.	रा. के.	चं.	सू.	बृ.	भौ.	बु.	श.	रा. के.	चं.	सू.	बृ.	भौ.	बु.	श.	शु.	दशेश
१	१	०	०	०	०	०	१	१	०	०	०	०	१	१	१	वर्ष
४	६	२	४	७	९	११	२	९	२	५	८	१०	१	४	६	मास
१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	दिन

होरालग्नानयन—

द्विघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्तो भं शेषं च पलीकृतम् ।
दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयं भवेत् ॥
विषमेऽङ्के रवौ योज्यं समेऽङ्के लग्नादिषु ॥ ७४ ॥

इष्ट घटी पल को २ से गुणा करके ५ का भाग देने से लब्धि राशि होती है। शेष का पल बना के १० से भाग देने पर लब्धि अंश होते हैं। यदि जन्मलग्न विषमसंख्यक हो तो राश्यादि सूर्य में एवं यदि जन्मलग्न सम संख्यक हो तो राश्यादि जन्मलग्न में पूर्व लब्धि को जोड़* देने से स्पष्ट होरा लग्न होती है ॥ ७४ ॥

उदाहरण—

इष्टकाल १३।५५ को २ से गुणा किया तो (१३।५५) × २=२७।५० गुणन फल हुआ। इस २७।५० में ५ का भाग दिया तो लब्धि ५ राशि हुई। शेष २।५० का पल बना १७० में १० का भाग दिया तो लब्ध १७ अंश हुए। इस लब्ध राशादि ५।१७ को जन्म लग्न (मिथुन) विषम संख्यक होने के कारण स्पष्ट सूर्य ११।२०। ५८।० में जोड़ दिया तो राश्यादि स्पष्ट होरा लग्न ५।७।५८।० हुई।

---

* किसी २ का मत है कि सर्वदा सूर्य ही में जोड़ना चाहिये परन्तु अनार्ष होने के कारण यह मत हेय है।

जैमिनि के अनुसार आयुर्दाय साधन—

लग्नेशरन्ध्रपत्योश्च लग्नेन्द्वोर्लग्नहोरयोः।
सूत्राण्येवं प्रयुञ्जीयात्संवादादायुषां त्रये ॥ ७५ ॥
लग्ने वा मदने चन्द्रे चिन्तयेल्लग्नचन्द्रतः।
अन्यथा शनिचन्द्राभ्यां चिन्तनीयं विचक्षणैः ॥ ७६ ॥

(१) लग्नेश और अष्टमेश से (२) लग्न और चन्द्रमा से और (३) लग्न तथा होरालग्न से वक्ष्यमाण प्रकार से आयु का साधन करना चाहिये। द्वितीय प्रकार में यदि चन्द्रमा या लग्न सप्तम में बैठा हो तो लग्न-चन्द्रमा पर से अन्यथा (लग्न या सप्तम में न पड़ा हो तो) शनि-चन्द्रमा पर से आयु साधन करना चाहिये ॥ ७५-७६ ॥

आयुर्दाय ज्ञान का प्रकार—

चरे चरस्थिरद्वन्द्वाः स्थिरे द्वन्द्वचरस्थिराः।
द्वन्द्वे स्थिरोभयचरा दीर्घमध्याल्पकायुषः ॥ ७७ ॥

जिन दो ग्रहों के द्वारा आयु देखना है। उन में यदि एक चरराशि में दूसरा चर, स्थिर या द्विस्वभाव में हो तो क्रम से दीर्घ, मध्य और अल्प आयु जानना। यदि एक स्थिर में दूसरा क्रम से द्विस्वभाव, चर और स्थिर में हो तो दीर्घ, मध्य और अल्प आयु समझना। एवं यदि एक द्विस्वभाव में दूसरा क्रम से स्थिर, द्विस्वभाव तथा चर में हो तो दीर्घ, मध्य और अल्प आयु का योग होता है। स्पष्टता के हेतु नीचे का चक्र देखिये ७७

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चरे लग्नेशः १ चरे अष्टमेशः ८	चरे लग्नेशः १ स्थिरेऽष्टमेशः ८	चरे लग्नेशः १ द्विस्वभावेऽष्टमेशः ८
स्थिरे लग्नेशः १ द्विस्वभावेऽष्टमेशः ८	स्थिरे लग्नेशः १ चरे अष्टमेशः ८	स्थिरे लग्नेशः १ स्थिरे अष्टमेशः ८
द्विस्वभावे लग्नेशः १ स्थिरे अष्टमेशः ८	द्विस्वभावे लग्नेशः १ द्विस्वभावे अष्टमेशः ८	द्विस्वभावे लग्नेशः १ चरे अष्टमेशः ८

आयु स्पष्ट करने का प्रकार—

रसाङ्क ९६ गजाभ्रेन्दुभिः १०८ शून्यमास १२०
स्त्रिधा दीघमायुः कलौ सम्प्रदिष्टम्।
चतुष्षष्टि ६४ बाहद्रय ७२ शीति ८० प्रमाणै-
र्मतं मध्यमायुर्नृणां वत्सरैः स्यात् ॥ ७८ ॥

तथा द्वित्रि३२षड्वह्नि३६शून्याब्धि४०वर्षै-
र्भवेदल्पमायुर्नराणां युगान्ते ॥ ७६ ॥

उपर्युक्त तीनों रीतियों में से तीनों प्रकारों से भिन्न २ आयु आवे तो लग्न होरालग्न पर से आई हुई आयु समझना। ९६, १०८, १२० वर्ष की दीर्घायु, ६४, ७२, ८० वर्ष तक मध्यायु एवं ३२, ३६, ४० वर्ष तक अल्पायु योग कहा जाता है। इन में ३२, ३६, ४० वर्ष के खण्ड होते हैं। यदि तीनों प्रकार से दीर्घायु हो तो १२० वर्ष, दो प्रकार से दीर्घायु हो तो १०८ वर्ष, एक प्रकार से दीर्घायु हो तो ९६ वर्ष आयु जानना। एवं तीनों प्रकारों से अल्पायु योग हो तो ३२ वर्ष दो प्रकार से अल्पायु हो तो ३६ वर्ष, एक ही प्रकार से अल्पायु योग आवे तो ४० वर्ष आयु खण्ड समझना। लग्नेश–अष्टमेश के सम्बन्ध से मध्यमायु हो तो ८० वर्ष, लग्न-चन्द्रमा या शनि–चन्द्रमा के सम्बन्ध से मध्यायुयोग आता हो तो ७२ वर्ष और लग्न होरालग्न द्वारा मध्यायुयोग निश्चित हुआ हो तो ६४ वर्ष आयु जानना (अर्थात् उक्त खण्डों को ग्रहण करके आयु स्पष्ट करना) चाहिये।

उपर्युक्त विधि से आयुर्दाय विधायक ग्रहों का निश्चय हो जाने पर यदि एक ही प्रकार से साधन करना हो तो दोनों योग कारक ग्रहों के अंशादि का योग करके २ से भाग देने पर जो लब्ध हो उसको अंशादि जानना। एवं यदि दो प्रकार से आयुर्दाय निश्चित हुआ हो तो चारो योग कर्ताओं के अंशादि का योग करके ४ का भाग देकर लब्धि अंशादि बना लेना। एवं यदि तीनों प्रकार से आयु का निश्चय किया गया हो तो छओ योगकर्ताओं के अंशादि का योग करके ६ का भाग देना जो लब्धि आवे उस को आयुर्दाय साधन के योग्य अंशादि जाने।

उसके बाद इन लब्ध अंशादिकों को योगप्राप्त ३२, ३६ या ४० खण्डों से गुणा करके ३० का भाग देना तो लब्ध वर्षादि होगा इन लब्ध वर्षादिकों को को अल्पायु हो तो अल्पायु के प्राप्तखण्ड में, मध्यायु साधन करना हो तो मध्यायु के प्राप्तखण्ड में और दीर्घायु लाना हो तो दीर्घायु के प्राप्तखण्ड में घटा देने से स्पष्ट आयुर्दाय का मान होता है।

किसी २ आचार्य ने ३२, ६४ और ९६ रूप अल्पायु, मध्यायु और दीर्घायु का खण्ड कल्पना करके आयुर्दाय साधन करना लिखा है—

द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत्।
चतुष्षष्ट्या पुरस्तात्तु ततो दीर्घमुदाहृतम् ॥
पूर्णमादौ हानिरन्तेऽनुपातो मध्यतो भवेत्।
राशिद्वयस्य योगार्द्धं वर्षाणां स्पष्टमुच्यते ॥

अत एव द्वात्रिंशद्रूप खण्डा पर से आयु साधन करने के लिये नीचे सारणी दी जाती है ॥ ७८-७९ ॥

अंशफलसारणी—

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

कलाफलसारणी—

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८
घटी	२४	४८	१२	१६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२५
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१५	३६	०

विकलाफलसारणी—

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घटी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
घटी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कक्ष्या ह्रास-वृद्धि—

जैमिनि सूत्र के द्वितीयाध्याय प्रथमपाद के सूत्रों १०-१४ के अनुसार उपर्युक्त योगों में यदि शनि योगकर्ता हो तो कक्ष्या ह्रास होता है। (अर्थात् दीर्घायु का मध्यायु, मध्यायु का अल्पायु, अल्पायु का आद्यन्तभाव हो जाता है)। किसीके मतमें कक्ष्याह्रास नहीं होता। किन्तु जैमिनि का मत है कि शनि अपने राशि वा अपने उच्चराशि में बैठा हो तो कक्ष्याह्रास नहीं होता अन्यथा (न बैठा हो तो) कक्ष्याह्रास होता है।

एवं योगकारक बृहस्पति लग्न वा सप्तम में पड़ा हो अथवा केवल शुभ ग्रहों से ही युक्त वा दृष्ट हो तो कल्याबृद्धि होती है ।

अन्य प्रकार से आयु विचार—

पितृलाभरोगेशभाणिनि कण्टकादिस्थे स्वतश्चैवं त्रिधा ।

लग्न विषमसंख्यक हो तो क्रम से जो अष्टमेश और द्वितीयेश हों उनमें जो बलवान् हो वह ग्रह यदि लग्नसे केन्द्र [१।४।७।१०] में हो तो दीर्घायु पणफर [२।५।८।११] में हो तो मध्यायु और आपोक्लिम [३।६।९।१२] में हो तो अल्पायु जानना । यदि लग्न समसंख्यक हो तो उत्क्रम से जो अष्टमेश और द्वितीयेश [अर्थात् षष्ठेश और द्वादशेष] हों उन दोनों में जो ग्रह बली हो वह यदि केन्द्र में हो तो दीर्घायु, पणफर में हो तो मध्यायु और अपोक्लिम में हो तो अल्पायु समझना ।

रव्यादिक ग्रहों में जो सबसे अधिक अंशवाला हो उसको आत्मकारक कहते हैं । आत्मकारक से भी इसी प्रकार विचार करना चाहिये अर्थात् आत्मकारक ग्रह यदि विषम राशि में स्थित हो तो अष्टमेश और द्वितीयेश में, यदि समसंख्या की राशि में पड़ा हो तो षष्ठेश और द्वादशेश में जो ग्रह बली हो वह यदि कारक से केन्द्र में होतो दीर्घायु, पणफर में होतो मध्यायु आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होती है ।

परन्तु लग्न विषम संख्यक हो और कारक तृतीय में हो तो केन्द्र में रहने पर हीनायु, पणफर में मध्यायु और आपोक्लिम में दीर्घायु जानना तथा लग्न समसंख्याक और कारक एकादश में हो तो भी पूर्ववत् [केन्द्र में हीनायु, पणफर में मध्यायु और आपोक्लिम में दीर्घायु] जानना ।

इन दोनों योगों में अष्टमेश-द्वितीयेश अथवा षष्ठेश-द्वादशेष यदि कारक के साथ बैठा हो वा स्वयं कारक हो जाय तो मध्यमायु ही जानना ।

ग्रन्थसमाप्तिकाल—

हिमकरखगखेटेला१९९१मिते विक्रमाब्दे
शिवतम इषमासे स्वच्छपक्षे वलक्षे ।
शशितनुजनुषो वारे तिथौ सूर्यसूनो-
रगमदपि सुपूर्तिं जन्मपत्रप्रदीपः ॥ ८० ॥

श्रीविक्रम सं० १९९१ आश्विनशुक्ल विजया १० बुधवार को यह जन्मपत्रदीपक समाप्त हुआ ॥ ८० ॥

इत्याजमगढ़मण्डलान्तर्गतब्रह्मपुराभिजनसरयूपारीणपण्डितश्रीधर्मदत्तद्विवेदितनुजन्मना ज्यौतिषाचार्यश्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदिना विरचितो जन्मपत्रदीपकः समाप्तः ।

एतत्सुदीपपरिदीपनतोऽपि नष्टोऽज्ञानान्धकारनिचयो बुधहृद्गतश्चेत् ।
न स्यात्तदेनकिरणोद्गमसुप्रकाशाद् घूकाक्षिदोष इव मे किल कोऽस्ति दोषः ॥

श्रीगुरवः-शरणम् ।

मुद्रकः—विद्याविलास प्रेस, बनारस-१

....

Please ship the following packages and obtain Bill of Lading/Airway Bill on your usual terms and conditions of business and at our risk and responsibility.

We will take delivery of documents against payment of steamer freight as well as your charges for handling shipment. In case shipment,is made on freight Collect Basis, we agree to pay you the freight and all other charges occuring at destination if not paid by the consignee. We confirm that the contents of the packages have been truly and correctly declared by us. We authorise you to declare contents in the Shipping Bill to be filled by on our behalf with the Customs as per our invoice at our responsibility.

Goods despatched to Bombay/Thane-Truck receipt/Railway receipt No..............................

dt,..............................Freight duly PREPAID/TO-PAY.

(N.B.) Goods to be consigned till Thane only. (GR to mention please contact

1. No. & Type of Packages..
2. Description of contents..
3. FOB/C&F/CIF value....................Port of Discharge....................Steamer Freight..............
4. RBI Code No....................GRI Form No....................DT..............................
5. Gross Wt....................................Nett Weight..............................
6. Drawback Serial No....................................Rate of Drawback....................
7. INSTRUCTIONS FOR PREPARATIONS OF BILL OF LADING

   Shipper's Name..

....